अन्दर के पृष्ठों पर.....

प्राचार्य की कलम से	3
अपनी बात	4
अतिथि लेख	5
सार-समाचार	6
स्कूल इन्फो	8
रा.से.यो.	12
शिक्षक की कलम	15
संस्मरण	17
(विज्ञान-मन्थन-यात्रा)	
विशेषाँक लेख	19
(आज का भारत)	
कैरियर	22
बच्चों की कलम	24
डॉल्फिन से	30
अपना ज्ञान बढ़ायें	32
नन्ही कूची	35

सम्पादकीय

गणित–दिवस पर विशेष

श्रीनिवास रामानुजन

श्रीनिवास रामानुजन भारत के ऐसे महान् गणितज्ञ थे, जिन्होंने गणित बिना किसी विशेष के प्रशिक्षण के न केवल भारत को, बल्कि पूरे विश्व को गणित के क्षेत्र को असामान्य पाठ पढ़ाया। उन्होंने वैश्लेषिक गणित, संख्या–पद्धति अनन्त पद्धति व निरन्तर फलन के ऐसे सूत्र व प्रमेय दी, जिसे न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व के गणितज्ञ न समझ सके, रामानुजन ने अपनी पृथक् गणित की रचना की। प्रसिद्ध अंग्रेजी गणितज्ञ जी.एच. हार्डी व उनके प्रसिद्ध गणितज्ञ साथी यूलर व गास द्वारा उन्हें **''नेचुरल जीनियस''** कहकर पुकारा गया।

रामानुजन का जन्म इरोडे में एक गरीब ब्राह्मण–परिवार में हुआ। इरोडे उस समय मद्रास प्रान्त में आता था, जो अब तमिलनाडु में है। उनके पिता के. श्रीनिवास अयंगर साड़ी की एक दुकान में क्लर्क का काम किया करते थे। उनकी माता कोमलातामल एक गृहिणी थीं, जो अक्सर मन्दिरों में भजन गाया करती थीं। उनकी माता ने उनके जन्म के बाद तीन और बच्चों को जन्म दिया, परन्तु दुर्भाग्यवश उनमें से कोई जीवित न रहा।

1 अक्टूबर, 1892 में उन्हें एक लोकल स्कूल में दाखिला दिलाया गया। चूँकि रामानुजन के पिता अधिकांश समय अपने कार्य में व्यस्त रहते थे, इसलिए माता से उनका अधिक प्रेम रहा। उन्होंने अपनी माता से परम्पराओं, पुराणों और धार्मिक भजनों को गाना सीखा।

1897 में अपनी 10 वर्ष की अवस्था में उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा पूर्ण की। उन्होंने जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी वर्ष उन्हें शहर के हायर सेकण्डरी स्कूल में प्रवेश दिलाया गया।

अपनी 11 वर्ष की अवस्था में उन्होंने अपने कमरे में रहने वाले कॉलेज के दो विद्यार्थियों की गणित की सारी किताबें पढ़ डालीं। अपनी 13 वर्ष की उम्र में उन्होंने S.L. Loney की Advanced Trignometry की किताब उधार ली। उन्होंने शीघ्र ही उस किताब को पढ़ लिया और उस पर अपनी खुद की प्रमेय लिख डाली। उन्होंने वर्ग को हल करने की अपनी स्वयं की पद्धति खोज डाली। जब वे इण्टरमीडिएट कॉलेज में अध्ययन कर रहे थे। उनके K. Ranganath Rao पुरस्कार से प्रधानाध्यापक द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार ''असामान्य विद्यार्थी'' के रूप में दिया गया। रामानुजन का गणित विषय से इतना लगाव हो गया कि वे अपनी इस कक्षा में, जहाँ गणित में शत्–प्रतिशत् अंक लाये, तो वहीं दूसरे विषयों में उत्तीर्ण न हो सके। उनके अनुत्तीर्ण हो जाने पर उन्हें कॉलेज छोड़ना पड़ा। छात्रवृत्ति के बन्द हो जाने से वे अपना अध्ययन आगे जारी रख पाने में असमर्थ थे। 1905 में वह घर से भाग गये ओर वे राजमुन्द्री व विशाखापट्टनम में 1 माह तक रहे। बाद में, उन्होंने पुनः पंचयप्पा कॉलेज, मद्रास में प्रवेश लिया, परन्तु गणित में जहाँ उनका अभूतपूर्व प्रदर्शन रहता, वहीं दूसरे विषयों में अनुत्तीर्ण हो जाते। हार–मानकर उन्होंने स्वयं की नोटबुक लिखना शुरू कर दिया, परन्तु इससे घर का गुजारा कैसे चलने वाला था। उनके दिन बड़ी ही गरीबी से निकलने लगे। 14 जुलाई, 1909 को उनका विवाह मात्र 10 वर्ष की जानकी अम्मल से कर दिया गया। अचानक कुछ वर्ष बाद रामानुजन का स्वास्थ्य बिगडने लगा। चिकित्सकों ने उनके लिए एक सर्जिकल ऑपरेशन कराने के सलाह दी। पैसों के अभाव में उनके व उनके परिवार के लिए, यह बहुत कठिन काम था, किसी प्रकार किसी एक चिकित्सक को दया आयी और उनका निःशुल्क ऑपरेशन सफल होने के बाद रामानुजन ने एक क्लर्क की नौकरी खोज ली। इस प्रकार उनका लिखना जारी रहा। रामानुजन के कुल की देवी

थीं, नामगिरी। नामगिरी भगवान् विष्णु के नरसिंह अवतार की सहचारिणी मानी जाती हैं। रामानुजन को अपने स्वप्न में अक्सर रक्त की बूँदें दिखायी देती थीं। रक्त की बूँदें स्वप्न में दिखना वेदों के अनुसार शुभ माना जाता है। इसके बाद उन्हें नामगिरी देवी स्वप्न में कुल प्रमेय व सिद्धान्त बताती। जब रामानुजन सुबह जागते, तो उन प्रमेयों को कागज पर खींच कर सिद्धान्तों का रूप दे देते थे। उन्होंने अपनी पर्सनल डायरियों में भी लिखा है कि मेरे प्रमेय व सिद्धान्त वास्तव में ईश्वर के ही विचार हैं, जिन्हें कई बार मैं खुद भी नहीं समझ पाता हूँ।

कुछ समय पश्चात् रामानुजन की मुलाकात भारतीय गणितज्ञ रामास्वामी अय्यर से हुई, जब वह अपनी एक गणित की पुस्तक पर कार्य कर रहे थे। रामानुजन ने अपनी नोटबुक उन्हें दिखलायीं, जिन्हें देखकर वे स्तब्ध रह गये। उन्होंने इनमें से कुछ चयनित प्रमेयों में से इण्डियन मेथमेटिक्स सोसायटी के सेकेटरी व डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर को भेजा। सभी को सन्देह हुआ कि जिस व्यक्ति का एकेडमिक बैकग्राउण्ड इतना खराब रहा हो, वह इस तरह की प्रमेय व सिद्धान्त किस तरह लिख सकता है। कहीं नकल किया न हो। रामानुजन को उनसे बात करने के लिए बुलाया गया और गणित–सम्बन्धी कई प्रश्न पूछे गये, जिनके जवाब सुनकर सारे गणितज्ञ हतप्रभ रह गये। जब उनसे पूछा गया कि आप क्या चाहते हैं, तो उन्होंने कहा कि एक अच्छी–सी नौकरी, जिससे में अपने घर की आजीविका चला सकूँ। रामास्वामी की मदद से उनका प्रथम शोध इण्डियन मेथमेटिक्स सोसायटी द्वारा प्रकाशित किया गया, जिसे पूरे भारत के गणितज्ञों द्वारा सराहा गया

एक दिन जब उन्होंने अपने एक शुभचिन्तक शेष अय्यर को संख्या–सिद्धान्त के कुछ सूत्र दिखाये, तो उन्हें लन्दन के महान् गणितज्ञ हार्डी की याद आयी। हार्डी उस समय के, विश्व के जाने–माने गणितज्ञ कहे जाते थे। अय्यर द्वारा हार्डी से तुलना किये जाने पर उन्होंने हार्डी–शोधन के कुछ पहलू दिखलाये, जिस पर उन्होंने विस्तार से लिखा था। अय्यर के मार्गदर्शन में नोट्स को हार्डी के पास भेजा गया। जब हार्डी ने इन नोट्स को देखा, तो वे भौंचक्के रह गये और उन्होंने तुरन्त रामानुजन को भारत आने का आमन्त्रण भेजा, परन्तु अपनी आर्थिक स्थिति ठीक न होने से उन्होंने यह आमन्त्रण अस्वीकार कर दिया, परन्तु किसी तरह मद्रास विश्वविद्यालय से उन्हें शोध ाप्रति मिल गयी और उनका जीवन कुछ सरल हो गया। इसी दौरान प्रो. हार्डी ने उन्हें लन्दन आने के लिए सहमत कर लिया। रामानुजन ने इंग्लैण्ड जाने से पहले ही करीब 3000 से अधिक सूत्रों को अपनी नोटबुक में लिख लिया। इस प्रकार इंग्लैण्ड पहुँचकर जैसे ही हार्डी रामानुजन से मिले, हार्डी उनकी प्रतिभा से तुरन्त परिचित हो गये। रामानुजन ने इंग्लैण्ड में रहकर अपना शोध कार्य करने लगे। उनकी उपलब्धियों पर केम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने उन्हें बी.एड. की उपाधि प्रदान की। उन्हें ट्रिनिटी कॉलेज द्वारा फैलाशिप भी प्रदान की गयी। साथ ही वे, विश्व के रॉयल सोसायटी, लन्दन में सम्मिलित होने वाले सबसे कम उम्र के गणितज्ञ बने। देश की जलवायु व रहन–सहन का उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। डॉक्टरों ने उन्हें क्षय–रोग बताया। उस समय क्षय–रोगी को अधिक समय तक सेनैटोरियम में रहना पड़ता था। **अतः,** रामानुजन में अपने देश वापस लौटने का निश्चय किया और मद्रास लौटने पर उन्होने अपना शोध–कार्य जारी रखा। इसी दौरान उन्होंने मौ शीटा फक्शन पर एक उच्चस्तरीय शोध–पत्र लिखा। रामानुजन द्वारा प्रतिपादित इस फलन का उपयोग गणित ही नहीं, बल्कि चिकित्सा–विज्ञान में कैंसर जैसे रोग को समझने का प्रयोग किया गया। उनके खराब स्वास्थ्य के चलते सन् 1920 में उनकी मृत्यृ हो गई। उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी 87 वर्ष की अवस्था तक जीवित रहीं, जिनकी आजीविका का साधन रामानुजन द्वारा लिखी गयी नोटबुक ही थी। इन नोटबुक्स को मद्रास सरकार द्वारा रखा गया है, जिनके ऐवज में उनके परिवार को प्रतिमाह आर्थिक सहायता प्रदान की गयी।

ऐसे महान् गणितज्ञ के 125 जन्म–दिवस को भारत–सरकार ने प्रतिवर्ष 22 दिसम्बर को गणित–दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है तथा इस वर्ष ''राष्ट्रीय गणित–दिवस'' घोषित किया है। 32 वर्ष तक जीवित रहने वाले इस महान् गणितज्ञ ने अपने जीवन में 3884 प्रमेयों का संकलन किया। उन्होंने अपने शोधपत्रों में माध्यम से बसौली संख्याओं के गुणों का स्पष्ट किया। आज भी इनकी नोटबुक का Tata Institute of Fundamental Research (TIFR), Mumbai India द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है, परन्तु यह उनका छायाप्रति प्रकाशन है, उनका हस्तलिखित शोध–संकलन भारत–सरकार द्वारा सुरक्षित रखा गया है। हार्डी एक ऐसे जौहरी थे, जो रामानुजन के प्रतिभा जौहर का भली–भाँति जानते थे। हार्डी ने उस समय के प्रतिभाशाली व्यक्तियों को 100 के पैमाने पर आँका था। अधिकांश वैज्ञानिकों को उन्होंने 100 में से 35 अंक दिये और कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को 60 अंक दिये गये। ऐसे शत्–प्रतिशत् बेमिसाल भारतीय को हम सभी नमन करते हैं।

– सन्दीप रावत
(सम्पादक)

प्राचार्य की कलम से.....

प्रिय विद्यार्थियो व पाठको,

क्रमशः का एक ओर अंक आपके हाथों में है। मुझे बेहद प्रसन्नता है कि विद्यालय में चलाया जा रहा यह सकारात्मक कदम निरन्तर अपने पथ पर अग्रसर है। मैं सम्पादक–मण्डल को क्रमशः के इस अंक पर बधाई देता हूँ।

मैं अपने विद्यार्थियों से यही कहना चाहूँगा कि जिस तरह से हमारे प्रतिभाशाली विद्यार्थी राज्य–स्तर, राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित कर रहे हैं, उसी प्रकार विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी अपने जीवन में सफलता के शिखर छुए, समाज, देश, प्रदेश व राष्ट्र में अपनी पहचान कायम करे, परन्तु आज के समय में जो सबसे बड़ी आवश्यकता है, वह है, इंसान बनने की अर्थात् इंसानियत सीखने की। भगवान् ने हमें मनुष्य–रूप दिया, पर क्या हम इस शब्द की सार्थकता समझ पाये हैं। आज हर तरफ असामाजिक खबरों का बोलबाला है, शान्ति की चिड़िया भारत निरन्तर दुराचार के शिकार से ग्रसित है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को देश को इस स्थिति से उबारना होगा। आज हमें अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर बनने से ज्यादा एक सामाजिक व्यक्ति बनने पर पहले जोर देना होगा। अपने लिए जीने से पहले समाज के साथ जीना सीखना होगा, तभी हम भारत के सच्चे नागरिक कहे जा सकेंगे। मेरा सभी पालकों व अभिभावकों से भी अनुरोध है कि वे अपने बच्चों को प्रारम्भ से ही अच्छे संस्कार दें। महापुरुषों की जीवनी पढ़ने के लिए प्रेरित करें, भारतीय संस्कृति के बारे में बतायें, ताकि सुगठित व सांस्कृतिक राष्ट्र 'भारत' अपने अस्तित्व में बना रहे, अन्यथा पश्चिमी संस्कृति से ओतप्रोत भारत का आगामी भ्रष्ट व कुत्सित रूप हम सबको भय से आक्रान्त करने हेतु तैयार खड़ा है। इस कार्य की शुरूआत विद्यार्थियों को स्वयं से करनी है। कहा गया है, हम सुधरेंगे, जग सुधरेगा अर्थात् यदि देश का प्रत्येक नागरिक केवल अपने आपको सुधार ले, तो राष्ट्र का स्वरूप अपने–आप ही सुधर जायेगा।

स्वामी विवेकानन्द से एक बार एक जापानी ने पूछा कि ''भारत में गीता, रामायण, वेद, उपनिषद् का इतना ऊँचा दर्शन है, फिर भी वहाँ के लोग इतने डरे सहमें व निर्धन क्यों हैं?

इस पर स्वामीजी ने उत्तर दिया कि बन्दूक बहुत अच्छी हो, पर यदि सैनिक उसे चलाना न सीखे, तो फिर वह कैसा सैनिक! यही कारण है कि वेद–उपनिषद् का इतना ऊँचा दर्शन होने के बावजूद वहाँ के लोग इस प्रकार से भयभीत हैं।''

इस प्रसंग से मैं केवल यही कहना चाहता हूँ कि हमारे पास संसाधन होते हुए भी हम उनका उपयोग कर पाने में असमर्थ हैं।

नवांकुर अपने इस कार्य में सतत् रूप से क्रियाशील है। राष्ट्रीय–सेवा–योजना व विद्यालयीन सामाजिक गतिविधियाँ के माध्यम से हम विथार्थियों को समाज से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। साहित्यिक गतिविधियों के माध्यम से उनमें बौद्धिक क्षमताओं को विकसित करने के लिए विद्यालय में बौद्धिक प्रकोष्ठ गठित किया गया है, परन्तु इन सबके बावजूद आवश्यकता है, तो केवल सक्रिय भागीदारी की, फिर चाहे क्षेत्र कोई हो–

अंतः में, मैं केवल यही कहना चाहूँगा कि–
रहो जमीं पर मगर आसमाँ का ख्वाब रखो
खड़े न रह सको इतना न सर झुकाओ कभी,
तुम अपनी सोच को, हर वक्त लाजवाब रखो,
उभर रहा है सूरज तो, धूप निकलेगी ही सही,
सदा उजालों में रहो, मत धुन्ध का हिसाब रखो।

– शैलेन्द्र कुमार दीक्षित, प्राचार्य

अपनी बात

प्रिय विद्यार्थियो,

हम सभी ने हमेशा से ही सुना है कि भारत एक महान् देश है, लेकिन वह महान् बना क्यों हैं, आज इस पर विचार करते हैं। मेरे विचार से इसकी महानता का सबसे बड़ा परिचायक इसकी अनेकता में एकता है। भारत में आप किसी क्षेत्र में देखें, तो आपको इतनी भिन्नताएँ मिलेंगी, जितनी पूरे विश्व में न हों, परन्तु इससे बड़ी बात यह है कि फिर भी हम एक हैं। हमने उन विभिन्नताओं में सामंजस्य इस प्रकार स्थापित कर लिया है कि यह अब हमारी एक विशेषता बन गयी है। दूसरा परिचायक है, हमारा इतिहास। इतना महान् और गौरवशाली इतिहास अन्य किसी देश का नहीं है। भारत का इतिहास इस बात का भी गवाह है कि अच्छाई और बुराई तो हर युग में थी, लेकिन सदैव अच्छाई की बुराई पर जीत हुई और हमारा अस्तित्व आज भी है और इसी प्रकार आगे भी रहेगा। तीसरा परिचायक है, हमारी सम्पदा, हमारी प्राकृतिक धरोहर। जितनी अधिक प्राकृतिक सम्पदा भारत के पास है, उतनी अन्य देशों के लिए तो सपना-मात्र है। हमारे यहाँ हर प्रकार के मौसम के आनन्द हैं। नदी, तालाब, झरने, फल-फूल आदि तो हमें स्वर्ग-सा आनन्द प्रदान करते हैं, तभी भारत के कश्मीर को तो 'धरती का स्वर्ग' कहा जाता है। चौथा परिचायक है, हमारी कला। हमारे देश में सभी प्रकार की कलाओं का विकास हुआ है। चित्रकला से लेकर मूर्त्तिकला, स्थापत्य-कला से लेकर वास्तुकला, रंगमंच हो या युद्ध-क्षेत्र, हर कला में भारत अग्रणी रहा है। पाँचवा परिचायक है, हमारा ज्ञान। ज्ञान के बल पर ही आज हम विश्व-गुरु कहलाते हैं। इतनी सारी विशेषताएँ एक साथ और कहीं नहीं मिलेंगी। अब अगर भारत को महान् नहीं कहा जाये, तो क्या कहा जाये ? भारत की इन्हीं खूबियों के बारे में जब विदेशियों ने सुना, तो इस पर कब्जा करने के लिए कई बार भारत पर आक्रमण किये, लेकिन इतिहास साक्षी है, जो हमारे देश में आया, वह भारत पर तो कब्जा नहीं कर पाया। अन्ततः भारत ने ही उसके मन पर कब्जा कर लिया और वह भारत का ही हो गया। भारत उस बहती हुई पवन की तरह है, जो जिस बगीचे से होकर गुजरती है, उसकी खुशबू अपने साथ लेकर आगे बढ़ जाती है और लोगों को मोहित कर देती है। इसे कोई रोक नहीं सकता। इसलिए हमें अपने देश पर गर्व करना चाहिए।

''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।''

जय हिन्द, जय भारत।

- योगेश चतुर्वेदी

(व्याख्याता-भौतिक शास्त्र)

ये देश हमारा है

ये देश हमारा है, हमें जान से प्यारा है।
जो इसको आँख दिखाये, वो दुश्मन हमारा है।।
वो दुश्मन हमारा है।
काश्मीर से कन्याकुमारी, है सारी धरती हमारी।
कच्छ के रन से अरुणाचल तक, हमने ही सँवारा है।।
हमने ही सँवारा है।
ये देश हमारा है..... ।।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, हम सब हैं भाई-भाई।
एक हैं हम एक रहेंगे, यही संकल्प हमारा है।।
यही संकल्प हमारा है।
ये देश हमारा है..... ।।
कुरान - ग्रन्थ साहिब - बाईबिल - गीता।
जिन्होंने सारे, जहाँ को जीता।।
जीवन में सबने, सदा ही अपने भावों से उतारा है।।
अपने भावों से उतारा है।
ये देश हमारा है..... ।।
ये भूमि है संस्कारों की, जरुरत नहीं उपहारों की।
भावनाओं से जुड़े हुए हैं, इसे दिल से स्वीकारा है।।
इसे दिल में उतारा है।
ये देश हमारा है..... ।।

- शैलेन्द्रकुमार पिंगले
व्याख्याता (हिन्दी)

माह जनवरी एवं फरवरी में

जन्म दिन वाले

सभी विद्यार्थियों को

नवांकुर-परिवार

का शुभाशीष!

अतिथि-लेख

जयति जय मध्यप्रदेश

जयति जय मध्यप्रदेश, जयति जय मध्यप्रदेश महान्।
भारत की हृदयस्थली, और देश की जान।।
जयति जय मध्यप्रदेश महान्।।
जन-जन को स्नेह बाँटती, इसकी नदियाँ सदा-सर्वदा।
सोन-केन-चम्बल और बेतवा, ताप्ती मोक्षदायिनी नर्मदा।।
क्षिप्रा और तवा नदियाँ, करती हैं गौरव-गान।
जयति जय मध्यप्रदेश महान्।।
भारत-भवन और बिड़ला मन्दिर, साँची के स्तूप हैं सुन्दर।
माण्डवगढ़-पचमढ़ी-ओरछा, स्थल हैं ये अतिशय सुन्दर।।
खजुराहो-ताजुल मस्जिद है, इस प्रदेश की जान।
जयति जय मध्यप्रदेश महान्।।
खड़े हुए हैं पर्वत अविचल, अरावलि-सतपुड़ा-विन्ध्याचल।
महादेव मैकल पहाड़ियाँ, फैली हैं शोभित यह स्थल।।
ओंकारेश्वर तीर्थ महेश्वर, गाते वेद पुरान।
जयति जय मध्यप्रदेश महान्।।
भाषाएँ कितनी अलबेली, भीली और निमाड़ी बघेली।
ब्रजभाषा की बात निराली, है अनुपम बोली बुन्देली।।
राजभाषा हिन्दी होती है, शीश पे शोभायमान।
जयति जय मध्यप्रदेश महान्।।
राजाभोज की नगरी प्यारी, है इसकी पवित्र रजधानी।
है सुरम्य परिवेश राज्य का, इस प्रदेश की अमर कहानी।।
लघुभारत इसको कहते हैं, इस पर है अभिमान।
जयति जय मध्यप्रदेश महान्।।

रचनाकार-
संजय श्रीवास्तव ''प्रज्ञा''
अध्यापक-शा.मा.वि.मलकपुर

जो धार नहीं रुकती है चट्टानों से भी,
सागर केवल उसका अभिनन्दन करता है।
कागज की बनी नाव केवल
दो क्षण पानी पर चलती है।
जो बिना तेल जलती बाती,
वह केवल दो क्षण जलती है।
तूफान घुमड़ कर जब चलता,
बुझ जाते अनगिनत दीप जले।
जो जलते केवल जलने को,
वो दब जाते अँधियार तले।
जो दीप नहीं बुझते हैं, तूफानों में भी,
उजियारा उनकी बाती बनकर जलता है।
जो पाँव नहीं रुकते हैं, व्यवधानों में भी,
पर्वत केवल उनके आगे ही झुकता है।
चलना-गिरना, फिर से चलना
उन्नति सोपानों का क्रम है
चलते-चलते ही मिट जाना,
जीवन का पावन संगम है।
उसका पौरुष ही पुण्य धाम,
जिसकी साँसों में तीरथ है।
जिसमें निश्चय का तेज पुंज
गंगा का वही भगीरथ है।
हर लक्ष्य उसी के लिए बना,
जो तप करता विश्वासों का।
हर फूल उसी की माला है,
जो दास नहीं मधुमासों का।
जो साहस का प्रतिबिम्ब न दे,
वह केवल दर्पण का पट है।
जिसके अधरों पर प्यास नहीं,
वह पनघट केवल मरघट है।
जो प्यास नहीं बुझती है, मर-जाने पर भी,
अमृत केवल उनके अधरों को मिलता है।

- शम्भूदयाल शर्मा
सेवानिवृत्त शिक्षक व समाजसेवी

सार-समाचार

साइना ने जीता डेनमार्क ओपन – तीसरी वरीयता प्राप्त भारत की साइना नेहवाल ने डेनमार्क ओपन का खिताब जीत लिया है। साइना ने फायनल मुकाबले में जर्मनी की जुलियमन रौंक को 21-17, 21-8 से हराया।

ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों में पढ़ायी जायेगी हिन्दी – ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों में हिन्दी और अन्य प्रमुख एशियाई भाषाएँ पढ़ायी जायेंगी। भारत और अन्य एशियाई देशों से मजबूत सम्बन्ध बनाने के लिए यह एक रणनीति तय की गयी है। प्रधानमन्त्री जूलिया गिलार्ड ने एशियन सैंचुरी व्हाइट पेपर जारी करते हुए इसकी घोषणा की।

पंकज 7 वीं बार चैम्पियन बने – रूपेश शाह के बाद पंकज आडवानी ने सफलता के क्रम को आगे बढ़ाते हुए सातवीं बार विश्व बिलियर्ड्स चैम्पियनशिप पर अपना कब्जा जमा लिया। फायनल में आडवानी ने इंग्लैण्ड के दिग्गज खिलाड़ी व गत चैम्पियन माइक रसैल को 1216 के मुकाबले 1895 से हराया। आडवानी का यह कुल 8 वाँ विश्व-खिताब है।

क्वाण्टम भौतिकी में नयी राह खोलने वाले दो वैज्ञानिकों को मिला नोबेल पुरस्कार– इस बार का भौतिकी का नोबेल पुरस्कार क्वाण्टम भौतिकी से जुड़े वैज्ञानिकों फ्रांस के सर्ज हारोश और अमेरिका के डेविड वाइनलैण्ड को दिया जायेगा। इन दोनों को पृथक् क्वाण्टम प्रणाली के मापन और परिवर्तन की क्षमता वाला महत्त्वपूर्ण प्रयोग करने के लिए चयनित किया गया।

दूधिया रोशनी में रंगीन गेंद से टेस्ट मैचों की अनुमति – अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद् ने दिन-रात के टेस्ट मैचों के लिए अनुमति दे दी है, जबकि उपयोग में लायी जाने वाली गेन्द के रंग और प्रकार का निर्णय बोर्ड-सदस्यों पर छोड़ दिया है। साथ ही, आई.सी.सी. ने टेस्ट, वनडे और 20-20 के अन्तर्राष्ट्रीय नियमों में बदलाव किये हैं।

सौर-ऊर्जा के सहारे ईधन व बिजली मिलेगी – वैज्ञानिकों ने एक नयी तकनीक विकसित की है, जिससे सौर-ऊर्जा के माध्यम से ऐसे रसायन निकलते हैं, जिनका संग्रहण कर बिजली और ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। यह तकनीक पौधों द्वारा भोजन तैयार करने के लिए इस्तेमाल होने वाली प्रकाश-संश्लेषण (फोटोसिन्थेसिस) की तर्ज पर काम करती है।

मंगल पर मिला पानी का पहला सबूत – सौर- मण्डल में पृथ्वी जैसे मंगल ग्रह पर जीवन की सम्भावना तलाशने गये नासा के मार्स रोबर क्यूरोसिटी को ऐसे सबूत मिले हैं कि कभी लाल ग्रह पर पानी था, जो जीवन का प्रमुख घटक है।

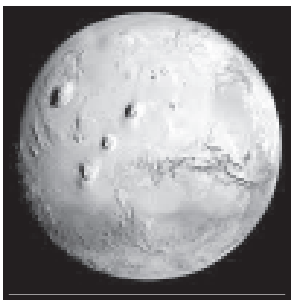

मुकेश अम्बानी लगातार पाँचवे वर्ष भारत के सबसे धनी व्यक्ति – रिलायंस इण्डस्ट्रीज के मालिक जाने-माने उद्योगपति मुकेश अम्बानी ने देश के सबसे धनी व्यक्ति होने का अपना रुतबा लगातार पाँचवे वर्ष बनाये रखा है। अमेरिका की पत्रिका फोर्ब्स की ओर से जारी भारत के 100 सबसे धनी भारतीयों की सूची में शीर्ष पाँच में मुकेश अम्बानी अब भी पहले पायदान पर बने हुए हैं।

सुनीता ने रच दिया इतिहास – भारतीय मूल की अमेरिकी अन्तरिक्ष-यात्री सुनीता विलियम्स ने एक और इतिहास रचा। उन्होंने अपने साथी यात्री के साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन से बाहर निकलकर अन्तरिक्ष में चहलकदमी करते हुए कूलिंग सिस्टम में अमोनिया गैस के रिसाव को बन्द कर दिया। उनकी इस कामयाबी पर नासा ने उन्हें बधाई-सन्देश दिया।

प्रदेश में बने इंजन से दौड़ेंगी दुनिया भर की मेट्रों ट्रेनें - दुनिया-भर में आधुनिक परिवहन का पर्याय बनी मेट्रो रेल जल्दी ही प्रदेश में बने इंजनों के दम पर दौड़ेंगी। सीहोर जिले के शेरपुर गाँव में देश का पहला निजी डीजल लोकोमोटिव इंजन का कारखाना लगाया जा रहा है। जहाँ इन इंजनों का निर्माण किया जायेगा। फिलहाल यहाँ बने इंजनों को कनाडा की मेट्रो में लगाया जायेगा।

पाक को हराकर भारतीय महिलाएँ बनीं चैम्पियन - भारत की महिला क्रिकेट टीम ने चिर-प्रतिद्वन्द्वी पाकिस्तान को हराकर एशियाई क्रिकेट परिषद् (ए.सी.सी.) महिला ट्वेंटी-ट्वेंटी एशिया कप खिताब जीत लिया है। इस टूर्नामेण्ट का आयोजन पहली बार किया गया था।

लम्बी उम्र चाहते हैं, तो सदा खुश रहिये - जो लोग हँसी-खुशी से जिन्दगी जीते हैं, वे जीवन का मजा नहीं लेने वालों की तुलना में ज्यादा जीते हैं। यूनिवर्सिटी कॉलेज, लन्दन के शोधकर्ताओं ने यूनिवर्सिटी के इंग्लिश लॉन्गीच्यूडनल स्टडी ऑफ एजिंग के साथ मिलकर शोध किया। यह शोध मनोवैज्ञानिक रूप से बेहतर 50 से 100 वर्ष की उम्र वर्ग के दस हजार लोगों पर 9 वर्ष तक किया गया।

वेटल फिर चैम्पियन - गति के बेताज बादशाह और गत दो बार के चैम्पियन रेडबुल के जर्मन ड्राईवर सेबेस्टियन वेटल ने बुद्ध इण्टरनेशनल सर्किट में अपना साम्राज्य कायम रखते हुए दूसरी इण्डियन ग्रांप्री शानदार अन्दाज में जीत ली। वेटल ने इस तरह फार्मूला वन चैम्पियनशिप में खिताबी चौका लगा दिया।

- **सुनील भावसार** (उ.श्रे.शि.)

बढ़े चलो

बढ़े चलो बढ़े चलो,
पथ पर तुम बढ़े चलो।
हौंसला रखो तुम, धीर से बढ़े चलो।
मन में विश्वास हो, लक्ष्य की तुमको प्यास हो,
साहस को भरके, नौजवाँ बढ़े चलो।
बढ़े चलो बढ़े चलो,
पथ पर तुम बढ़े चलो
तेरा सम्मान हो, खुद का तुमको ज्ञान हो,
न अभिमान हो, शान से बढ़े चलो।
गरीब को पनाह दो, हटाओ तुम गुनाह को,
देश का भविष्य हो तुम, तुम तो अब बढ़े चलो।
बढ़े चलो बढ़े चलो, पथ पर तुम बढ़े चलो
रात हो चाहे दिन भी हो, करने का कुछ मन भी हो।
जलाके तुम मन में लौ, दीप की तुम ले चलो
बढ़े चलो बढ़े चलो, पथ पर तुम बढ़े चलो।

- नीतेश जैन
सहा.शिक्षक (डॉल्फिन)

समय का मूल्य

एक वर्ष का मूल्य - फेल होने वाले विद्यार्थी से पूछो।
एक माह का मूल्य - समय से पूर्व जन्म देने वाली माँ से पूछो।
एक सप्ताह का मूल्य - पत्र की साप्ताहिकी लिखने वाले पत्रकार से पूछो।
एक दिन का मूल्य - प्रतिदिन कमाकर खाने वाले मजदूर से पूछो।
एक घण्टे का मूल्य - पढ़ने वाले विद्यार्थी से पूछो।
एक मिनिट का मूल्य - स्टेशन पर गाड़ी छूट जाने वाले यात्री से पूछो।
एक सेकण्ड का मूल्य - दुर्घटना में बचते हुए मुसाफिर से पूछो।
एक मिलीसेकण्ड का मूल्य - ओलम्पिक की स्पर्धा में भाग लेकर स्वर्णपदक हारने वाले से पूछो।

- **सौमिल जैन** (कक्षा-8 डॉल्फिन)

स्कूल-इन्फो

कु. आयुषी तिवारी के मॉडल का राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन

इंस्पायर योजना के अन्तर्गत दिनांक 21 से 23 अक्टूबर 2012, तक नईदिल्ली के प्रगति मैदान में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित मॉडल-प्रतियोगिता में विद्यालय की छात्रा कु. आयुषी तिवारी पुत्री श्री अनिल तिवारी, कक्षा-10 ने अपने **अवशिष्ट-प्रबन्धन** विषय पर मॉडल का प्रदर्शन करके खूब वाहवाही लूटी और रु. 2500/- का पुरस्कार तथा यात्रा-भत्ते के रूप में रु. 500/- की राशि प्राप्त की।

गौरतलब है कि कु. आयुषी तिवारी ने सत्र 2010-11 में इंस्पायर योजना के अन्तर्गत मध्यप्रदेश के इन्दौर में राज्य-स्तर पर अपना मॉडल प्रस्तुत किया था, जिसकी उपयोगिता देखकर विदिशा जिले के 4 मॉडलों के साथ इसका चयन राष्ट्रीय स्तर के लिए किया गया था। बासौदा विकासखण्ड से कु. आयुषी तिवारी मॉडल-प्रदर्शन करने वाली एकमात्र छात्रा थीं।

इस मॉडल में कु. आयुषी ने अवशिष्ट पदार्थों, जैसे रद्दी कागज या अन्य कूड़े-कचरे को अलग-अलग करके उपयोगी बनाने की विधि बतायी थी।

इस मॉडल के निर्माण करने में विद्यालय के व्याख्याता अविनाश डोंगरे, योगेश चतुर्वेदी तथा छात्र कार्तिक दुबे, अभिषेक पटेल, लोकेन्द्र तथा रचित ने छात्रा कु. आयुषी तिवारी को मार्गदर्शन तथा सहयोग प्रदान किया।

- **सम्यक जैन,** (कक्षा-7)

संस्कृत-गौरव-दिवस-महोत्सव में नवांकुर की छात्रा द्वितीय

संस्कृत-कालिदास अकादमी, उज्जैन द्वारा संस्कृत-गौरव-दिवस-महोत्सव के अन्तर्गत विदिशा में आयोजित जिला-स्तरीय भाषण-प्रतियोगिता में वरिष्ठ वर्ग में नवांकुर की छात्रा कु. चंचल भारद्वाज पुत्री श्री अनिल कुमार भारद्वाज ने **''वर्तमान सन्दर्भ में संस्कृत की उपादेयता''** विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कर द्वितीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया। इस उपलक्ष्य में उन्हें रु. 750/- का नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र व साहित्य-सामग्री प्रदान की गयी।

वहीं निबन्ध-प्रतियोगिता में वरिष्ठ वर्ग में विद्यालय की छात्रा कु. सिमरन रघुवंशी पुत्री श्री संजय रघुवंशी ने **''महर्षि पतञ्जलि का संस्कृत-साहित्य में योगदान''** विषय पर विचार प्रस्तुत कर सान्त्वना के रूप में प्रमाण-पत्र प्राप्त किया।

स्वतन्त्रता-दिवस पर हुआ मेरिट-अवार्ड-2012 का वितरण

विद्यालय में कक्षा 10 एवं 12 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा को मेरिट अवार्ड-2012 से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड कक्षा 10 में 600 में से 574 अंक प्राप्त कर जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली, विद्यालय की छात्रा कु. उमा दाँगी पुत्री श्री धीरजसिंह दाँगी को तथा कक्षा 12 में 500 में से 466 अंक अर्जित कर, जिले में तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र प्रदीप राजपूत पुत्र श्री अमोलसिंह राजपूत को प्रदान किया गया। इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक-एक हजार रुपये की नकद राशि छात्रों को प्रदान की

गयी। उल्लेखनीय है कि यह अवार्ड नगर की सेवानिवृत्त शिक्षिका श्रीमती लक्ष्मीदेवी खन्ना द्वारा स्व. श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना की स्मृति में प्रदान किया गया।

इसी प्रकार विद्यालय के अध्यक्ष श्री विजय शिरढोणकर की पुत्री एवं विद्यालय की पूर्व छात्रा श्रीमती श्रद्धा शिरढोणकर द्वारा कक्षा 8 एवं कक्षा 10 में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाली छात्रा को श्रद्धा-पुरस्कार के रूप में प्रतिवर्ष रु. 1000-1000 की नकद राशि प्रदान की जाती है। इस वर्ष यह पुरस्कार कक्षा 8 में 1710 में से 1673 अंक प्राप्त करने वाली छात्रा कु. पायल जैन पुत्री श्री प्रमोदकुमार जैन को तथा कक्षा 10 में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा कु. उमा दाँगी पुत्री धीरजसिंह दाँगी का प्रदान किया गया।

कृति ग्रुप, इन्दौर द्वारा विद्यालय की छात्रा कु. उमा दाँगी पुत्री धीरजसिंह दाँगी को हाईस्कूल परीक्षा-2012 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर कास्ता गोल्ड मेडल व प्रमाण-पत्र और साहित्य-सामग्री प्रदान करके सम्मानित किया गया। यह गोल्ड-मेडल और प्रमाण-पत्र विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्रकुमार दीक्षित, वरिष्ठ आचार्य श्री पहलवानसिंह राजपूत और डॉल्फिन स्कूल के प्राचार्य श्री रमेश शर्मा द्वारा संयुक्त रूप से कु. उमा दाँगी को स्कूल असेम्बली में प्रदान किया गया।

गौरतलब है कि कु. उमा दाँगी ने हाईस्कूल परीक्षा-2012 में कुल 600 में से 574 अंक प्राप्त करके जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

विज्ञान-मन्थन-यात्रा में डॉल्फिन से 1 छात्र तथा नवांकुर से 22 छात्र सम्मिलित हुए

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा आयोजित मेधावी छात्र-छात्राओं की विज्ञान मन्थन यात्रा में भाग लेकर नवांकुर के विद्यार्थियों का दल लौट आया। इस यात्रा में पूरे प्रदेश से 625 मेधावी छात्र-छात्राओं का चयन किया गया, जिसमें विदिशा जिले से कुल 46 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया, जिनमें से 22 छात्र-छात्राएँ नवांकुर से एवं 1 डॉल्फिन से चयनित किये गये। इस यात्रा में कक्षा 8 के दल में कु. आकांक्षा बैरागी, आयुष अग्रवाल, कु. आकांक्षा चौधरी, कु. मनीषा शर्मा, कु. रिया तिवारी, कु. साक्षी राय, कु. सुमन सौजन्य व डॉल्फिन स्कूल से नितिन रिछारिया सम्मिलित थे। इस दल ने लखनऊ की यात्रा में बायोटेक पार्क, रीजनल साइंस सेण्टर, नेशनल ब्यूरो फिसजेनेटिक रिसोर्स, इन्दिरा गाँधी प्लेटोरियम आदि को देखा। कक्षा 9 के छात्र-छात्राएँ अमित रघुवंशी, अनिकेश दुबे, शिवम रघुवंशी, कु. क्षमा राय एवं कु. पायल राय के दल ने अहमदाबाद जाकर साइंस सिटी, विक्रम साराभाई अन्तरिक्ष प्रदर्शनी, साबरमती आश्रम, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजायन, विक्रम साराभाई कम्युनिटी साइंस सेण्टर, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एक्यूप्रेशनल हैल्थ, अक्षरधाम-मन्दिर और अमूल डेयरी का अवलोकन किया। कक्षा 10 के छात्र शुभम आचवल ने हैदराबाद जाकर इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, बिरला साइंस सेण्टर, सेण्टर ऑफ सेल्यूलर एण्ड मोल्युकूलर बॉयोलॉजी, इण्डियन रिमोट सेंसिंग, सालारगंज म्यूजियम, नेहरू जियोलॉजिकल पार्क का अवलोकन किया। कक्षा 11 के छात्र-छात्राओं के दल में निखलेश चौधरी, कु. निकिता रिछारिया, कु. रश्मि दाँगी, प्रवीण रघुवंशी व कु. उमा दाँगी ने बैंगलुरु की यात्रा में श्री वानी शैक्षिक केन्द्र, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, भारतीय ताराभौतिकी अनुसन्धान, जवाहरलाल नेहरु प्लेनोटोरियम, सेण्टर फॉर मैथमेटिकल मॉडलिंग तथा कम्प्यूटर सिम्युलेशन, विश्वेश्वरैया इंट्राटीरियल एण्ड टेक्नोलॉजी म्यूजियम, ऐरानॉटिक्स लिमिटेड का अवलोकन किया। वहीं कक्षा 12 के छात्र-छात्राओं के दल में ऋषभ दुबे, कु. पूजा रघुवंशी, कु. रानू रघुवंशी ने चैन्नै की यात्रा में सेण्टर लैटर इंस्टीट्यूट, काउंसिल ऑफ साइण्टिफिक इण्डस्ट्रीयल रिसर्च, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ऑर्गेनाईजेशन टेक्नोलॉजी, स्ट्रक्चर इंजीनियरिंग रिसर्च सेण्टर, सेण्टर इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रेकिश वॉटर एक्वाकल्चर तथा इण्डियन मेरीटाइम यूनिवर्सिटी का अवलोकन किया। इस यात्रा का उद्देश्य विज्ञान के क्षेत्र में छात्र-छात्राओं को प्रेरित करना है। इस यात्रा का समस्त व्यय मध्यप्रदेश-शासन द्वारा किया जाता है। यात्रा के पश्चात् छात्र-छात्राएँ अति हर्षित और उत्साहित हैं।

संस्कृत-प्रतियोगिताओं में सम्भाग-स्तर पर भागीदारी

त्रयोदश कालिदास समारोह-में **कु. मीनाक्षी औदीच्य**, कक्षा-12 ने श्लोक-गायन में सम्भाग-स्तर पर अपनी प्रस्तुति दी, वही वरिष्ठ वर्ग में **विशाल गोस्वामी, कु. वैशाली जैन, विपिन रघुवंशी, कु. तुलसी कोरी, कु. शिवानी पटेल** सभी कक्षा-9 ने नृत्य नाटिका ''सर्वदमन भरत:'' की प्रस्तुति दी।

विज्ञान परियोजना का राज्य-स्तर पर चयन

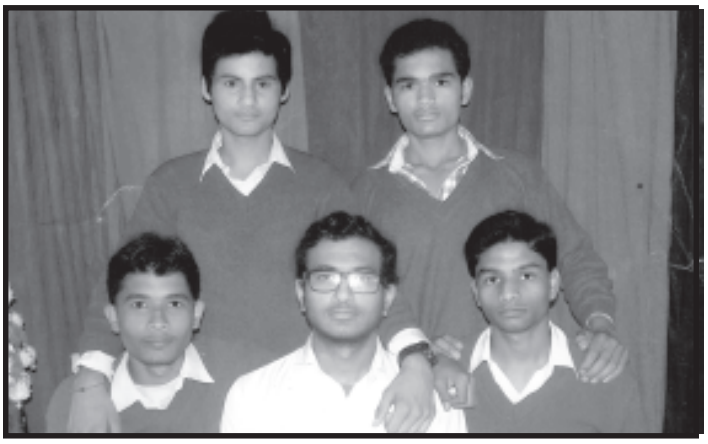

राष्ट्रीय बाल-विज्ञान काँग्रेस द्वारा जिला-स्तरीय विज्ञान-परियोजना-प्रतियोगिता का आयोजन विदिशा में किया गया, जिसमें नवांकुर से दो ग्रुप एवं डॉल्फिन स्कूल से तीन परियोजनाएँ सम्मिलित हुईं, इनमें से लोकेन्द्र रघुवंशी के समूह एवं नितिन रिछारिया (डॉल्फिन) के समूह की परियोजना का चयन राज्य-स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ।

विद्यालय के मॉडल सम्भाग-स्तर पर प्रदर्शित

सम्भाग-स्तरीय मॉडल-प्रतियोगिता में विद्यालय के दो छात्रों **अभिषेक पटेल**, कक्षा-12 एवं **शिवा राजपूत**, कक्षा-10 ने अपने-अपने मॉडल्स का प्रदर्शन किया।

इससे पूर्व जिला-स्तरीय मॉडल-प्रतियोगिता में विद्यालय से **अभिषेक पटेल**, कक्षा-12, **शिवा राजपूत**, कक्षा-10 एवं **प्राणेश श्रीवास्तव** कक्षा-9 ने अपने मॉडल्स प्रस्तुत किये, जिनमें से **अभिषेक पटेल** एवं **शिवा राजपूत** के मॉडल सम्भाग स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित हुए।

डॉज बॉल में राज्य स्तरीय पर भागीदारी

17 से 19 अक्टूबर तक मण्डीदीप में सम्भाग-स्तरीय डॉज बाल-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विदिशा जिले के दल ने उपविजेता का स्थान प्राप्त किया।

प्रतियोगिता में विद्यालय के चार छात्र-छात्राओं ने राज्य-स्तर पर भागीदारी की। कु. नीलू दाँगी, कक्षा-10, कु. दीक्षा आदिवासी कक्षा-10, वकील रघुवंशी कक्षा-12 एवं अरविन्द रघुवंशी कक्षा-12 ने।

नवांकुर के 6 एवं डॉल्फिन के 1 छात्र का राज्य-स्तरीय-शतरंज-प्रतियोगिता के लिए चयन -

दिनांक 28 से 30 सितम्बर तक राजगढ़ जिले की खुजनेर तहसील के शास. कन्या उ.मा.विद्यालय में आयोजित सम्भाग- स्तरीय शतरंज-प्रतियोगिता में स्थानीय नवांकुर विद्यापीठ के 9 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया, जिनमें से 7 छात्र-छात्राओं का चयन राज्य-स्तरीय-शतरंज-प्रतियोगिता के लिए किया गया ।

चयनित छात्र-छात्राओं के नाम इस प्रकार हैं - कु. पूजा रघुवंशी पुत्री श्री रामबाबू रघुवंशी कक्षा-12, कु. आरती बारोटिया पुत्री श्री प्रेमसिंह बारोटिया कक्षा-12, कु. भारती बारोटिया पुत्री श्री प्रेमसिंह बारोटिया कक्षा-11, कु. साधना रघुवंशी पुत्री श्री अवधनारायण रघुवंशी कक्षा-12, विशाल रघुवंशी पुत्र श्री मोहनसिंह कक्षा-11, भगतसिंह पुत्र श्री प्राणसिंह कक्षा-12, अभिषेक दाँगी पुत्र श्री जसवन्तसिंह दाँगी कक्षा-8 (डॉल्फिन) के नाम सम्मिलित हैं।

उपर्युक्त सभी छात्रों द्वारा उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन करने के कारण राज्य-स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयन किया गया। इनमें से छात्र विशाल रघुवंशी राज्य-स्तरीय खो-खो प्रतियोगिता में भी अपने खेल का प्रदर्शन कर चुके हैं।

राज्य-स्तरीय शतरंज-प्रतियोगिता का आयोजन बुरहानपुर में किया गया, जहाँ से भगतसिंह रघुवंशी एवं भारती बारोटिया का चयन प्री-नेशनल कैम्प के लिए हुआ। उल्लेखनीय है कि क्रीड़ा-प्रभारी कपिल गौड़ के मार्गदर्शन में नवांकुर विद्यापीठ के छात्र-छात्राएँ नयी-नयी सफलताओं को हासिल कर रहे हैं। सभी चयनित छात्र-छात्राओं की सफलता पर विद्यालय-परिवार ने हर्ष व्यक्त करते हुए शुभकामनाएँ दी हैं।

राष्ट्रीय बालरंग-महोत्सव में राज्य-स्तर पर भागीदारी

भोपाल में सम्भाग स्तरीय बालरंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कु. कंचन शर्मा, कक्षा-8 ने भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया एवं सुगम संगीत-प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत ढोलक-वादन एवं गायन में चेतन राजपूत कक्षा-11 ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दोनों प्रतिभागी राज्य-स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित हुए हैं।

अंजलि आचार्य की राज्य-स्तर पर भागीदारी

सम्भाग-स्तरीय पर्यावरण - गीत प्रतियोगिता मं अंजलि आचार्य, कक्षा-12 ने ''कही मान जाओ भईया पर्यावरण बचाओ'' गीत प्रस्तुत कर, प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं राज्य-स्तरीय प्रतियोगिता में जबलपुर में भागीदारी की ।

इससे पूर्व अंजलि आचार्य ने जिला-स्तर पर भी अपना पर्यावरण-गीत प्रस्तुत करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

राष्ट्र-स्तरीय-योग-प्रतियोगिता में विद्यालय के दो छात्रों का चयन

दिनांक 5-10-12 से 7-10-12 तक नवीन कन्या उ.मा.विद्यालय, तुलसी नगर, भोपाल में आयोजित सम्भाग-स्तरीय-योग-प्रतियोगिता में नवांकुर 37 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया, जिनमें से 14 छात्र-छात्राओं का चयन राज्य-स्तरीय-योग-प्रतियोगिता के लिए किया गया है।

उल्लेखनीय है कि सम्भाग-स्तरीय योग-प्रतियोगिता हेतु विदिशा जिले के कुल 42 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया था, जिनमें से 37 छात्र-छात्राओं का चयन विद्यालय से किया गया। राज्य-स्तर के लिए चयनित छात्र-छात्राओं में मिनी बाल-वर्ग में यश राजपूत, कक्षा-7 तथा मिनी बालिका-वर्ग में कु. आयुषी जैन कक्षा-8, कु. प्रियांशी गुप्ता कक्षा-8, कु. मुस्कान ठाकुर कक्षा- 6 के नाम शामिल हैं।

जूनियर बालक-वर्ग में सौरभ राठौर कक्षा-9, शुभम कुशवाह कक्षा-10, जूनियर बालिका-वर्ग में कु. ज्योति आदिवासी कक्षा-10, कु. योगिता पाली कक्षा-9 के नाम शामिल हैं। सीनियर बालक वर्ग में रवि कुशवाह कक्षा-11, गौरव साहू कक्षा-12, दीपेश साहू कक्षा-11 एवं सौरभ बघेल कक्षा-11 तथा सीनियर बालिका-वर्ग में कु. रंजना पाल कक्षा-12 व कु. शीतल रघुवंशी कक्षा-9 के नाम शामिल हैं। राज्य-स्तरीय योग प्रतियोगिता का आयोजन मण्डला में किया गया, जहाँ से सौरभ बघेल एवं रवि कुशवाह का चयन राष्ट्र-स्तरीय-योग प्रतियोगिता के लिए हुआ।

गौरतलब है कि शासन के निर्देशानुसार इस वर्ष से राज्य-स्तरीय प्रतियोगिता में भागीदारी करने वाले छात्र-छात्राओं को कुल 10 अतिरिक्त अंक तथा राष्ट्रीय स्तर पर भागीदारी करने वाले छात्र-छात्राओं को कुल 20 अंक अतिरिक्त उनके कुल प्राप्तांकों में सम्मिलित किये जायेंगे।

रासेयो-समाचार

शिक्षक-दिवस का आयोजन

विद्यालय की राष्ट्रीय सेवा-योजना-इकाई द्वारा शिक्षक-दिवस-कार्यक्रम बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र के पूजन-अर्चन के साथ हुआ। कार्यक्रम में बालिका रासेयो इकाई की छात्राओं ने समस्त शिक्षकों का रोली, अक्षत् एवं रासेयो बैज लगाकर सम्मान किया, साथ ही गुरुवन्दना प्रस्तुत की गयी।

इस अवसर पर स्वयंसेवक अभिषेक मिश्रा ने बताया कि सर्वश्रेष्ठ युवा ही देश का नवनिर्माण कर सकते हैं व देश की व्यवस्था एवं भ्रष्टाचार को समाप्त कर सकते हैं।

स्वयंसेविका कु. प्रियंका मिश्रा ने बताया कि देश में नवनिर्माण में शिक्षकों का महत्त्व अद्भुत है। सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों के अभाव में कोई देश प्रगति नहीं कर सकता। कु. शिल्पा जैन ने वक्तव्य में बताया कि विद्यार्थी देश का भविष्य है। एक श्रेष्ठ विद्यार्थी देश का सच्चा नागरिक होता है।

बौद्धिक प्रकोष्ठ प्रभारी श्री शम्भूसिंह रघुवंशी ने बताया कि एक डॉक्टर यदि भूल करता है, तो एक मरीज ही नष्ट होता है। एक इंजीनियर भूल करे, तो एक मकान ही नष्ट होता है, लेकिन एक शिक्षक भूल करे, तो सारा देश नष्ट हो जाता है।

रासेयो कार्यक्रम अधिकारी हरिओम शरण शर्मा ने शिक्षक-दिवस की शुभकामनाएँ प्रदान कर, डॉ. राधाकृष्णन के जीवन के महत्त्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डाला एवं उनके चरित्र एवं आदर्शों पर चलने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का समापन **''हम होंगे कामयाब.....''** गीत के साथ हुआ।

हिन्दी-दिवस का भव्य आयोजन

रासेयो के तत्त्वावधान में विद्यालय में **''हिन्दी दिवस''** का भव्य आयोजन किय गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती पूजन से हुआ। इस दौरान स्वयंसेवक कु. अंजलि आचार्य व कु. आकांक्षा शर्मा द्वारा सरस्वती-वन्दन किया गया। स्वयंसेवक कु. माधुरी सेन व कु. प्रियंका नरवरिया ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत तिलक लगाकर किया।

इस अवसर पर स्वयंसेवक रजत शुक्ला ने **''भारत वर्ष महान् है''** (गीत-गायन), स्वयंसेवक अभिषेक मिश्रा ने ''हर इंसान के इरादे नेक होने चाहिये'' (कविता) तथा स्वयंसेवक ध्रुव शर्मा ने ''हिन्द की दुनिया को हिन्द वाला देश दो'' कविता का वाचन किया। वहीं स्वयंसेवक सौरभ साहू, सुरेन्द्र साहू, मीनल शर्मा, कु. आकांक्षा शर्मा, कु. आयुषी जैन, कु. ज्योति प्रजापति तथा विनय शर्मा ने भी अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दीं ।

विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार दीक्षित ने इस अवसर पर हिन्दी भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री शम्भूसिंह रघुवंशी ने स्वतन्त्रता-प्राप्ति के 60 वर्ष बाद भी हिन्दी के पिछड़ेपन व सरकारी कामकाज की भाषा न बनने पर दुःख प्रकट किया। विद्यालय के व्याख्याता श्री शैलेन्द्र कुमार पिंगले ने हिन्दी की दुर्दशा पर दुःख व्यक्त करते हुए, दिखावे के लिए अंग्रेजी का प्रयोग करने से मना किया। विद्यालय के आचार्य श्री सुनील भावसार ने अपने वक्तव्य में कहा-हिन्दी का प्रयोग देश-विदेश में दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र संघ में उसके महत्त्व को स्वीकार किया जायेगा। कार्यक्रम में अन्य अतिथिगण श्री रमेश शर्मा, पहलवानसिंह राजपूत, केशव लाहौरी, सन्दीप नारायण जेतली, सन्दीप रावत, विजय शर्मा एवं रोमेश बक्षी, श्रीमती रेणु श्रीवास्तव ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

स्वतन्त्र वही हो सकता है, जो अपना काम अपने-आप ही कर लेता है। - **कु. शिवानी शर्मा** (कक्षा-9)

नवांकुर के स्वयंसेवकों ने किया रक्तदान-दिवस का आयोजन

दिनांक 1 अक्टूबर, 2012 को राष्ट्रीय सेवा-योजना नवांकुर-इकाई द्वारा विद्यालय में स्वैच्छिक रक्तदान-दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ रासेयो गीत **''करें राष्ट्र निर्माण''** के साथ हुआ। तत्पश्चात् स्वयंसेवक कु. आकांक्षा शर्मा द्वारा **''दानों**

में दान-रक्तदान'' गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में स्वयंसेवक विनोद सौजन्य एवं नीलेश सैनी ने रक्तदान पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य महोदय ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए, भविष्य में रक्तदान करने एवं रक्तदान के प्रति लोगों को जागरूक करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बासौदा में रक्तसेवा से सम्बन्धित हो रहे उल्लेखनीय कार्यों पर प्रकाश डाला। उल्लेखनीय है कि नवांकुर की रासेयो इकाई के विभिन्न शिविरों के माध्यम से लगभग 1500 युवक अपना रक्त-समूह-परीक्षण सम्पन्न करा चुके हैं।

इस अवसर पर नवांकुर रासेयो-इकाई के कार्यक्रम-अधिकारी श्री हरिओम शरण शर्मा ने मध्यप्रदेश में निरन्तर बढ़ते जा रहे रक्तदान के प्रतिशत के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्रदान की एवं आचार्य श्री सन्दीप रावत ने युवाओं को रक्तदान के लिए आगे आने एवं अन्य लोगों को जागरूक करने हेतु प्रेरित किया। विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री सन्दीप जेतली ने स्वयंसेवकों को समाज में फैली रक्तदान से जुड़ी हुई भ्रान्तियों से अवगत कराया।

कार्यक्रम का संचालन स्वयंसेवक श्री आनन्द गुप्ता द्वारा किया गया तथा कार्यक्रम का समापन ''हम होंगे कामयाब'' गीत के साथ हुआ। कार्यक्रम में के-यान के माध्यम से वीडियो फिल्म का प्रदर्शन किया, जिसके द्वारा स्वयंसेवकों ने रक्तदान के महत्त्व को जाना।

स्वयंसेवकों ने किया विश्व-जनसंख्या दिवस पर चिन्तन

विश्व-जनसंख्या दिवस पर राष्ट्रीय सेवा-योजना-इकाई द्वारा **''जनसंख्या-वृद्धि कारण एवं निदान''** विषय पर एक वैचारिक संगोष्ठी का आयोजन बड़े उत्साहपूर्वक किया गया, जिसमें रासेयो के सभी स्वयंसेवकों एवं शिक्षकों ने अपने-अपने विचार जनसंख्या-वृद्धि पर दिये। कार्यक्रम का शुभारम्भ रासेयो ''गीत आओ जवान आओ'' से हुआ।

स्वयंसेवक रोहित कुर्मवंशी, कक्षा-12 ने कहा कि जनसंख्या-वृद्धि एक विराट समस्या के रूप में उपस्थित है, जिसे रोकना हम सभी का दायित्व है। स्वयंसेवक अरविन्द रघुवंशी ने कहा कि किसी देश के लिए जनसंख्या तभी महत्त्वपूर्ण होती है, जब वह एक निश्चित अनुपात में बढ़े।

कैरियर प्रकोष्ठ-प्रभारी श्री सन्दीप रावत ने बताया कि जनसंख्या-वृद्धि को रोकने के लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपने जिम्मेदारी समझनी होगी, तभी जनसंख्या पर नियन्त्रण हो सकेगा। रासेयो कार्यक्रम-अधिकारी श्री हरिओम शरण शर्मा ने जनसंख्या-वृद्धि पर माल्थस के जनसंख्या-सिद्धान्त एवं अनुकूलतम जनसंख्या-सिद्धान्त की व्याख्या की।

बाल-मित्र-योजना-प्रभारी श्री योगेश चतुर्वेदी ने स्वयंसेवकों से आह्वान किया कि हम सभी को जागरूक होकर एवं वर्तमान की समस्याओं को ध्यान में रखकर परिवार नियोजन को अपनाना ही पड़ेगा। आचार्य श्री रोमेश बक्षी ने जनसंख्या दिवस पर जनसंख्या-वृद्धि से होने वाले दुष्प्रभावों से समाज को बचाने पर बल दिया।

कार्यक्रम का समापन **''हम होंगे कामयाब.....''** गीत से हुआ।

रासेयो-बालिका इकाई द्वारा महिलाओं का उन्मुखीकरण

दिनांक 5 अक्टूबर, 2012, को मध्यप्रदेश सरकार के बेटी-बचाओ-सप्ताह के प्रथम दिवस राष्ट्रीय सेवा-योजना नवांकुर की

बालिका-इकाई की स्वयंसेविकाओं ने एक रैली निकालकर बेटी बचाने का सन्देश दिया। यह रैली नवांकुर विद्यालय से प्रारम्भ होकर वार्ड नं. 6 में स्थित श्रीमती राजकुमारी भावसार के आँगनबाड़ी केन्द्र पर पहुँची, वहाँ पर वार्ड-पार्षद-प्रतिनिधि श्री पृथ्वीसिंह रघुवंशी की उपस्थिति में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में आँगनबाड़ी-कार्यकर्ता श्रीमती राजकुमारी भावसार ने पार्षद-प्रतिनिधि श्री पृथ्वीसिंह रघुवंशी एवं रासेयो कार्यक्रम-अधिकारी श्रीमती रेणु श्रीवास्तव तथा विशेष अतिथि आँगनबाड़ी-कार्यकर्ता कमला पवार का तिलक लगाकर एवं श्रीफल भेंटकर स्वागत किया। इस अवसर पर बालिका स्वयंसेविका कु. कनिका तिवारी, कु. ऊषा रघुवंशी, कु. चाँदनी प्रजापति एवं कु. ज्योति दुबे ने सामूहिक गीत ''देश में अगर बेटियाँ हैं'' का गायन किया, वहीं स्वयंसेविका कु. प्रियंका नरवरिया ने अपने उद्बोधन में बेटियों का महत्त्व बताया। स्वयंसेविका कु. दीक्षा रघुवंशी, कु. सुरभि पटवा, कु. साक्षी विश्वकर्मा, कु. प्राची भदौरिया ने सामूहिक गीत का गायन किया। इस अवसर पर आँगनबाड़ी केन्द्र में अनेक महिला हितग्राही और बेटियाँ उपस्थित थीं। स्वयंसेविका कु. झलक जैन एवं कु. अंजलि कुशवाह ने तिलक

तथा पुष्पों द्वारा बेटियों का सम्मान किया। कार्यक्रम-अधिकारी श्रीमती रेणु श्रीवास्तव ने बताया कि बेटियों के गिरते अनुपात को देखकर ही सरकार ने इस अभियान की शुरुआत की है। पार्षद प्रतिनिधि श्री पृथ्वीसिंह रघुवंशी ने अपने उद्बोधन में बेटियों को सभी प्रकार की सुविधाएँ देने का भरोसा दिया, वहीं विद्यालय के आचार्य श्री सुनील भावसार ने इस अवसर पर कहा कि जिस घर में बेटियाँ होती हैं और उनका सम्मान होता है, वहाँ पर देवता निवास करते हैं। कार्यक्रम का संचालन स्वयंसेविका कु. आयुषी जैन ने किया तथा अन्त में आँगनबाड़ी कार्यकता राजकुमारी भावसार ने उपस्थित सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अन्त में उपस्थित हितग्राहियों तथा बच्चों को फल एवं बिस्किट के पैकेट का वितरण किया गया।

बेटियाँ

ओस की एक बूँद-सी होती हैं बेटियाँ।
स्पर्श खुरदुरा हो तो, रोती हैं बेटियाँ।।
रौशन करेगा बेटा तो एक ही कुल को।
दो-दो कुल की लाज, होती हैं बेटियाँ।।
कोई नहीं है दोस्तो, एक-दूसरे से कम।
हीरा अगर है बेटा, तो मोती हैं बेटियाँ।।

विधि का विधान है, समाज की परम्परा।
अपने प्रियों को छोड़, पिया के घर जाती हैं बेटियाँ।।
बेटी धन पराया होता है, मैं यह सुनता आया।
दर्द विदाई का क्या होगा, आज समझ में आया।।
गम और खुशी का रिश्ता कैसा यह अजब है भाई।
किसकी बेटी लेगी उससे विदाई।।

संकलित-कु. राजनन्दिनी दाँगी (कक्षा-10)

शिक्षक की कलम

नारी

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:''

यह वाक्य हमारे देश में अक्सर कहा जाता है। पुराणों में नारियों का सम्मान किसी से छुपा नहीं है। उसी देश में आज नारियों का इस प्रकार अपमान होता देखकर, मन व्यथित हो जाता है। क्या नीचे लिखी पंक्तियाँ, जो नारी के सम्मान में लिखी गयी हैं, हमारा युवा समझ पायेगा। यदि किसी एक पंक्ति से भी उसका हृदय बदलता है, तो मैं समझूँगी कि कवि के द्वारा लिखी ये पंक्तियाँ आज जीवित हो उठीं-

नारी का पाकर नेह सरिस, नर बन जाता है नारायण।
तुलसी के पीछे रत्ना थी, तब रची गयी थी रामायण।।

होता न कभी यह विश्व धन्य, पा गीता का प्रेरक सन्देश।
उसकी रचना के पीछे थे, दुखिनी द्रोपदी के खुले केश।।

जिस गोदी में खेले रामकृष्ण, यह विश्व उसे अब देगा क्या।
नारी का करके तिरस्कार, नर उन्नति कर पायेगा क्या।।

वह यशोधरा का ही तप था, जो गौतम बुद्ध महान् बने।
घर में रहकर जिस अबला ने,
आँचल से पति-पथ शूल चुने।।

बा थी बापू की प्रेरणा-स्वरूप, जिससे उनका पथ सुगम बना।
इतिहास साक्षी है वरना, था अन्धकार तो बहुत घना।।

वह वीर जवाहर की बेटी, जिससे भूगोल दहलता था।
उठते-गिरते इंगित पर, सागर की अतल मचलता था।।

वह देखे आँख उठाकर भी, तो नीला नभ थर्रा जाये।
जिसके शब्दों से इतिहास बने, वह फिर भी अबला कहलाये।

हो न सकेगा विश्व उऋण, नारी के तप औ त्यागों से।।
फिर भी नारी है बँधी हुई, स्नेह के कच्चे धागों से।।

- श्रीमती रेणु श्रीवास्तव
(उ.श्रे.शि.)
श्री एस.के.श्रीवास्तव (पिताजी)
के कविता संग्रह से ली गयीं पंक्तियाँ

गौ-रक्षण पालन तथा संवर्धन

विप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार।

हिन्दू गाय को माता मानते हैं, क्योंकि हिन्दुओं ने परमात्मा की उन रचनाओं को जो चैतन्य, प्रेम, ममता, करुणा, त्याग, सन्तोष, सहिष्णुता, पवित्रता, सरलता, समर्पण आदि दिव्य गुणों एवं दैवी शक्ति से ओतप्रोत उस रचना को माँ शब्द से सम्बोधित किया। गाय के महत्व का हमारे पूज्य ऋषियों, मुनिगण, सन्तों, महात्माओं, धर्माचार्यों, ज्ञानियों ने अपने अनुभव के आधार पर धर्मशास्त्रों में जगह-जगह उल्लेख किया है। भगवान् कृष्ण को सारा ज्ञानकोष गोचरण से ही प्राप्त हुआ है, जिससे आगे चलकर संसार का उद्धार करने वाली गीता का ज्ञान निकला। भगवान् कृष्ण का सर्वप्रिय नाम गोपाल है। भगवान् राम के पूर्वज महाराजा दिलीप ने एक गाय को सिंह से बचाने के लिए अपना शरीर-अर्पण कर दिया। तुलसीदास के अनुसार धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों फल गाय के चार थन हैं। भगवान् बुद्ध को, उस क्षेत्र के सरदार की बेटी सुजाता द्वारा गायों के दूध की खीर खिलाने पर, तुरन्त ज्ञान और मुक्ति का मार्ग मिला। भगवान् महावीर स्वामी के अनुसार गौरक्षा-बिना मानव-रक्षा सम्भव नहीं है। महात्मा गाँधी ने कहा था कि गौमाता जन्म देने वाली माता से भी बढ़कर है। माँ तो साल-दो साल दूध पिलाकर हमसे फिर-जीवन भर सेवा की आशा रखती है, पर गौमाता को सिवा दाने और घास के किसी सेवा की आवश्यकता ही नहीं, बल्कि गौमाता स्वयं जीवन-पर्यन्त हमारी अटूट सेवा करती है और मरने के बाद चमड़ा, हड्डी, सींग से चामत्कारिक लाभ देती है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कहा था एक गाय अपने जीवनकाल में 410440 मनुष्यों का एक समय का भोजन जुटाती है। पूज्य देवरहा बाबा ने कहा था जब तक गौमाता का रुधिर भूमि पर गिरता रहेगा, कोई धार्मिक तथा सामाजिक अनुष्ठान सफल नहीं होगा। हनुमान प्रसाद पोद्दार ने कहा था, जब तक भारतकी भूमि पर गौरक्त गिरेगा, तब तक देश सुख-शान्ति और धन-धान्य से वंचित रहेगा। हमारी कृषि के आधार आधुनिक

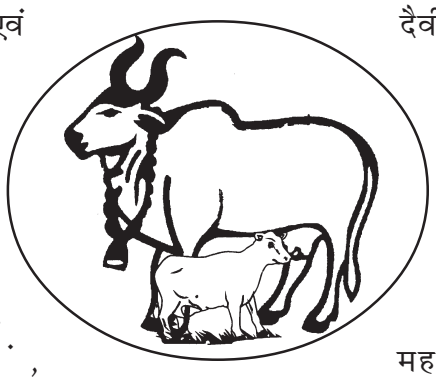

अनुसन्धान ने गौमाता को चलता-फिरता चिकित्सालय कहा है, उसमें औषधियों का भण्डार है।

गौमाता मानव-जाति के लिए भगवान् की कृपा-स्वरूप आशीर्वाद है। भारत-भूमि पर उसका महत्त्व प्राचीन समय से ही है। गाय मानव को पाप-मुक्त कर स्वर्ग तक पहुँचाती है। ऐसी माता की हत्या उस देश में जिसने दुनिया को अहिंसा, दया और करुणा का सन्देश दिया, जहाँ स्वयं भगवान् ने मनुष्य-अवतार धारण करके गौ-सेवा की और गोपाल कहलाये। हम गौमाता कहने वाले उसके पुत्र-पुत्री उसकी रक्षा की जगह उसके लिए कचरे के ढेर में पॉलीथिन की थैलियाँ उसके खाने के लिए छोड़ देते हैं, जो उसकी मौत का कारण बनती है। गाय के शरीर में तैतीस करोड़ देवता निवास करते हैं। एक गाय की पूजा करने से स्वयमेव करोड़ों देवों की पूजा हो जाती है।

- राजेन्द्रसिंह यादव
(सहायक शिक्षक)

''हैप्पी मदर्स-डे''

''हैप्पी मदर्स डे'' माँ! सुबह जब राहुल का फोन आया, तो मुझे बहुत खुशी हुई। चलो, छः माह बाद ही सही, राहुल बेटे ने आज याद तो किया। राज को तो याद ही नहीं है।

मैंने राहुल से कहा कि बेटा आकर, मुझे राज के पास से, ले जा। कब तक राज के पास रहूँ। मेरा मन तेरे पास रहने को भी करता है। तुरन्त कई बहानों का अम्बार लग गया। वो भी चाशनी में लिपटे हुए कि उसके आगे मैं कुछ न बोल सकी। समझ गयी कि मुझ जैसी लाचार बेबस माँ, जिसके हाथ-पैर नहीं चल सकते, उसे रख पाना, सेवा करना आसान काम नहीं है। मेरी आँखें भर आयीं, मानो कह रही हों कि उम्मीद मत कर, राहुल-रागिनी तुझे लेकर नहीं जाना चाहते।

तभी राज ने आकर मुझे बिस्तर से उठाया, मुझे नहलाया, कंघी की, तैयार किया और बहू ने नाश्ता व दवाई दी और दोनों काम पर चले गये और आज मैं समझ गयी कि हैप्पी मदर्स-डे कहने वाले राहुल व मेरी सेवा तन-मन-धन से करने वाले राज में क्या अन्तर है।

- **श्रीमती रितु श्रीवास्तव**
(सहायक शिक्षिका)

ARE WE SOWING WEEDS ?

Are the seeds of weeds being sown by us in our students life? It is true while we are cultivating the crops of our life. We are planting good deeds and happy thoughts in place of negative thinking. Bad habits and carelessness are automatic, we must stop and protect in ourselves. We should be careful and attentive when we do our daily activities

It is easy to develop negative activities and behavior towards others but it is tough to increase positive thoughts and activities in ourselves. Negative thoughts are harmful for the people who are related to us in autobiography of our life. The tough way of developing thoughts makes life easy and comfortable for living standard of real life which makes great connectivity of people and opportunities for our life.

The harmful deeds are too much talking scolding abusing and discussion about negative thoughts which can not be attentive for ourselves and intelligent our thought and mind are singular but the frequency of mind and thought are superb. If we are achieving knowledge sharply, we can learn full knowledge of subject but if we are not attentive for our subjects and divert our mind in different direction, we can not learn full knowledge of subject and we can not be perfect in a particular subject. So we must think and learn very sharply a subject at time. We should forget other all things at a time of study.

- Abhishek Mishra
(UDT-English)

सम्पादक मण्डल :-
शैलेन्द्रकुमार पिंगले ''सुमन'', सन्दीप रावत,
अजीतसिंह बैस, योगेश चतुर्वेदी,
राजेन्द्र यादव, सुनील भावसार,
नीलेश जैन

संस्मरण

विज्ञान-मन्थन-यात्रा 2012

कु. साक्षी राय, कक्षा-8

विगत कुछ दिनों पहले हमारे म.प्र. में 6वीं विज्ञान-मन्थन-यात्रा का आयोजन हुआ। मैं बहुत भाग्यशालिनी हूँ कि इस यात्रा के लिए मेरा भी चयन हुआ। मैं आपको इस यात्रा के दौरान हुए अपने अनुभव बताना चाहती हूँ। इस यात्रा के दौरान मैं लखनऊ गयी थी।

लखनऊ में रीजनल साइंस सिटी में हमने साइंस को बहुत करीब से देखा और बहुत कुछ जाना भी। वहाँ हमें 3-डी मूवी दिखायी गयी और साइमैक्स थिएटर में समुद्री-जीवन से सम्बन्धित एक मूवी दिखायी गयी। नेशनल बॉटनिकल इंस्टीट्यूट में हमने कई पेड़-पौधे देखे, जो अलग-अलग प्रकार के थे। इनमें से कई पौधे तो विदेशों से लाये गये थे। यह इंस्टीट्यूट पूरे भारत में केवल दो जगह हैं, जिनमें से एक लखनऊ व दूसरा कोलकाता में है। यहाँ का हाइबेरियम भारत के टॉप-3 पर है।

बायोटेक पार्क में हमने पेड़-पौधों की लगभग 500 से अधिक किस्में देखीं, जिनमें औषधीय पौधे, कैक्टस, साइकेड के पौधे व कई सारे पौधे थे। हमने वहाँ तीन रंगों की पत्तियों (लाल, पीली एवं हरी) वाले पौधे भी देखे, जिनमें लाल व पीली पत्तियों के पौधों की प्रजातियाँ नष्ट हो रही हैं।

सेण्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एण्ड एयरोनॉटिक्स प्लाण्ट्स सेण्टर में हमने कई रोगनिवारक पौधे देखे, वहाँ हमें डॉ. एस.के.तिवारी ने पौधों, खादों व उर्वरकों के बारे में बहुत सारी जानकारियाँ दीं।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर पार्क, जो 107 एकड़ में फैला है और हाथी के लिए विख्यात है, वह पार्क भी देखा। यह पार्क बहुत सुन्दर है।

नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज में हमने 3000 से अधिक मछलियों की प्रजातियाँ देखीं। इनमें कई मछलियाँ तो विदेशों से लायी गयी हैं।

इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ सुगरकेन रिसर्च में हमने गन्ने से शक्कर बनाना देखा और गन्नों के बारे में कई जानकारियाँ प्राप्त कीं।

रेसीडेंसी के म्यूजियम में हमने अवध राज्य के राजाओं की पुरानी तलवारें, शस्त्र व तोपें देखीं, वहाँ हमने अवध राज्य का कोषागार, फेयरहाउस, सैनिकों का स्मृति-स्तम्भ व कब्रिस्तान भी देखा।

बड़ा इमामबाड़ा, जिसमें औरंगजेब ने पहली बार नमाज पढ़ी थी, हम वह भी देखने गये। इमामबाड़े के अन्दर भूल-भुलैया भी है।

इन्दिरा गाँधी प्लेनेटोरियम में हमने सौरमण्डल से सम्बन्धित एक मूवी देखी। हमने वहाँ सेटेलाइट भी देखी। यह प्लेनेटोरियम पूरे विश्व में द्वितीय स्थान पर है।

बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट में हमने पुराने वनस्पतियों के अंश देखे, वहाँ 100 वर्ष से ज्यादा पुराने वनस्पति थे। मैं इस यात्रा में अगले वर्ष भी जाना चाहती हूँ। इस यात्रा के दौरान कई वैज्ञानिकों से मुलाकात हुई और बहुत सारी जानकारियाँ हमें प्राप्त हुईं।

प्रवीण रघुवंशी, कक्षा-11 गणित

मेरा चयन विज्ञान-मन्थन-यात्रा के लिए हुआ, जिसके कारण मैं बहुत उत्साहित था। मैं इसका सारा श्रेय हमारे विद्यालय और शिक्षकों को देता हूँ, क्योंकि इस योजना की सूचना आने के साथ ही विद्यालय ने अपनी जागरूकता दिखायी, जिससे कई विद्यार्थियों को प्रोत्साहन मिला। हमारी यात्रा के लिए केन्द्रित शहर बंगलुरु था। हमारे समूह का नाम प्लेटिनम-समूह था, वहाँ शिक्षकों को पालक-शिक्षक कहा जाता था, क्योंकि वह एक शिक्षक का कर्त्तव्य निभाने के साथ-साथ पालक का कर्त्तव्य भी निभाते थे।

हम गार्डन सिटी ऑफ इण्डिया, बंगलुरु को रवाना हुए। जहाँ हमने श्री वाणी एज्युकेशन सेन्टर, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स, गणितीय प्रतिरूपण एवं कम्प्यूटर अनुकरण-केन्द्र, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, विश्वेश्वरैया इण्डस्ट्रीयल एण्ड टेक्नोलॉजिकल म्यूजियम आदि संस्थानों का भ्रमण किया।

वहाँ हमने दुर्लभ वृक्ष-जैसे कीटभक्षी पौधे, कोको वृक्ष आदि देखे। डायमण्ड, रूबी, क्रिस्टलों को देखा और उनके बारे में जाना। हमने भारत की सबसे बड़ा दूरदर्शी यन्त्र देखा, मौसम विभाग के बारे में जानकारी प्राप्त की। सुपर कम्प्यूटर को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, अन्तरिक्ष के बारे में जाना। हमने कई हवाई जहाज और लड़ाकू विमानों की कार्य-पद्धति के बारे में जाना। हमने संग्रहालय में ऐसी दुर्लभ वस्तुओं को देखा, जो हम बिना इस यात्रा के नहीं देख पाते।

हमारा सबसे अच्छा अनुभव यह रहा कि हमें महान् वैज्ञानिकों से मिलने और बात करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिससे हमें सुखद अनुभूति हुई। हमें पता चला कि वैज्ञानिक बनने के लिए प्रत्येक क्रिया में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। प्रयोग करने के लिए

हमेशा बड़ी चीजों की आवश्यकता नहीं होती है। हम छोटी-छोटी वस्तुओं की सहायता से प्रयोगों को घर में भी कर सकते हैं। हमने कुछ धार्मिक स्थलों का भ्रमण भी किया, जिनमें देश-भर में प्रसिद्ध राधा-कृष्ण मन्दिर गये, जिसकी अलौकिक छटा सायंकाल दोगुनी हो जाती है।

केवल विज्ञान-मन्थन-यात्रा के समय ही हम उन संस्थानों का भ्रमण कर सकते हैं, जहाँ आम नागरिक के तौर पर प्रवेश नहीं मिल सकता। इस योजना के फलस्वरूप मध्यप्रदेश पूरे देश में अपनी छवि सुदृढ़ कर रहा है।

केवल 10 दिनों की यात्रा ने हमें आत्मविश्वास से भर दिया, जो प्रत्येक कार्य में उपलब्धि की नींव होती है। मैं चाहता हूँ कि हमारे भाई-बहिन और सहपाठी भी इसका लाभ उठायें। इसी आशा के साथ में अपने विद्यालय और शिक्षकों का आभार प्रकट करता हूँ। हम कह सकते हैं कि - Twinkle-twinkle little star, our teachers superstar.

ऋषभ दुबे, कक्षा-12 गणित

सबसे पहले मैं म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने मेरा इस विज्ञान-मन्थन-यात्रा में चयन किया। इसका श्रेय हमारे प्राचार्य जी एवं सभी शिक्षकों को दिया जाता है। विज्ञान-मन्थन-यात्रा का मुख्य उद्देश्य म.प्र. के उत्कृष्ट विद्यार्थियों की, विज्ञान के प्रति, रुचि बढ़ाना हैं, जिससे विद्यार्थी विभिन्न अनुसन्धानों की प्रयोगशालाओं को देखकर, वहाँ के वैज्ञानिकों को देखकर उनसे कुछ सीखें। कक्षा-8, 9, 10, 11 एवं 12 के क्रमशः ब्रांज, सिल्वर, गोल्ड, प्लेटिनम व डायमण्ड-समूह का नाम दिया गया। कक्षा - 8, 9, 10, 11 एवं 12 के विद्यार्थी भ्रमण के लिए क्रमश लखनऊ, अहमदाबाद, हैदराबाद, बंगलुरू व चैन्नै गये थे। कक्षा-12 के विद्यार्थी को 30 सितम्बर, 2012 को विज्ञान-भवन पहुँचना था। 01 अक्टूबर, 2012 को हम सुबह 3.30 बजे ट्रेन में बैठे। ट्रेन में दोस्तों के बीच एन्जॉय व पढ़ाई की बातें की। 3 तारीख को हम C.I.B.A. (The Central Institure of Brackishwater Aquaculture) गये। डॉ. वी. शान्ति ने मत्स्यपालन व केंकड़ा पालन से सम्बन्धित एक फिल्म दिखायी, वहाँ एक प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार की मछलियों को देखा। वहाँ के वैज्ञानिक गाँव की महिलाओं को मत्स्यपालन के बारे में बताकर उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए प्रेरित करते हैं। मुत्तुकाडु इंस्टीट्यूट में वहाँ के वैज्ञानिकों ने किस-किस तरह की मछलियों को रखा जाना चाहिए, जिससे उन्हें अधिक लाभ हो। उन्होंने अरोना मछली की कीमत 1 लाख रुपये बतायी । इसके बाद इस्कॉन मन्दिर (कृष्ण जी) धार्मिक स्थल देखने पर बहुत अच्छा लगा। 4 तारीख को हम स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग रिसर्च सेण्टर गए, वहाँ के वैज्ञानिक श्री चन्द्रशेखर ने भूकम्प से बड़े-बड़े भवन को बचाने के लिए किस तरह का कांक्रीट उपयोग में लाना चाहिए, उसके बारे में बताया। उन्होंने कम्प्रेसिव टेस्टिंग मशीन के द्वारा एक प्रयोग करके दिखाया। इसके बाद सेण्ट्रल लैदर रिसर्च इंस्टीट्यूट में एक फिल्म के द्वारा चमड़े का उपयोग जूते, चप्पल आदि में किया जाता है, दिखाया। किस-किस तरह के चमड़े का उपयोग जूते, चप्पल के किस-किस भाग में किया जाता है। अन्तिम दिन हम भारतीय समुद्र विश्वविद्यालय में आई.आई.टी. के छात्रों से मिले, छात्रों ने आई.आई.टी. पेपर को किस तरह हल करना है, उसके बारे में बताया। इसी दिन हम दोपहर में महाबलीपुरम् गये। वहाँ पर भगवान् की विभिन्न प्रकार की मूतियाँ देखीं। हम विज्ञान-मन्थन- यात्रा में हम तीन बार बीच (समुद्र-तट) पर गये। वहाँ से भोपाल आने के बाद एक परीक्षा हुई, शाम को समापन-समारोह के बाद हम घर आ गये। विज्ञान-मन्थन-यात्रा से मुझे बहुत अच्छा अनुभव हुआ, जो शायद मुझे इस विद्यार्थी जीवन में तो नहीं हो पाता।

My journey

Recently 6th Vigyan Manthan Yatra had been organised. I was very happy and lucky being the part of this because I was choosen for this journey. During it we went to Ahmedabad, first we went to Vikram Sarabhai Space exhibition. There we knew about satellite and Rocket. There we saw 4 sounding rocket and 5 satelite model. There we saw orbit configuration of Insat - 2 E and Insat - 3A model. After that we went to National Institute of Design (NID). NID is a design college of India. There we saw many designs like - pots, pictures, cartoons, films etc. After that we went to Sabarmati hermitage. This is 95 years old and there Gandhiji started 'Break Salt Law Movement'. There are keeping Gandhiji's glass, reel bobbin, slippers etc and a house model of Gandhi ji, next day we

went to National Institute of Occupational Health, first it's name was Occupational Health Research Institute. This institute works to remove occupational disease. First we went to Poison Information Centre. There we knew that Anti dot poison lessens effect. After that we went to Air Pollution Lab. There we saw Personal sampler machine that gives bear our body ? After that we saw Albia Rats in animals house, after that we went to Akshardham Temple. This temple is very big and beautiful. There we saw a water show. Next day we went to Vikram Sarabhai Community Science Centre. This centre was started on 1 June 1966. There we knew that Vikram Sarabhai made an engine when he was only 12 years old. We saw Physics, Chemistry and Maths experiments. After that we went to Science City. There we saw Dinosaurs model and many types of birds, trees, creatures. After that we saw many model related with science. There we knew how the rocket flies ? After that we went to Co-operative Milk Marketing Federation. There we saw how milk products are prepared. It was inaugurated by Pt. Jawaharlal Nehru. It is built on 50 acre land. There 1450000 ltr. milk is supplied from nearby villages.

- Ku. Kshama Rai
(Class-9)

विशेषांक लेख

भारत और विज्ञान

विज्ञान का हमारे देश से बहुत पुराना सम्बन्ध रहा है और इसकी पुष्टि हमारा इतिहास भी करता है, लेकिन इस तथ्य को भुलाकर हम सिर्फ यह कहते दिखायी देते हैं कि देश में विज्ञान का विकास होना अभी शुरू हुआ है।

वैदिक काल से ही भारत ने विज्ञान के क्षेत्र में विकास करना प्रारम्भ कर दिया था, हालाँकि यह विकास उतनी तेजी से नहीं हुआ था, जितनी तेजी से आज हो रहा है।

भारत के तत्त्वज्ञानियों ने कई साल पहले ही परमाणुवाद को विकसित कर लिया था। इस थ्योरी में थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी शामिल थी, जिसे तब सापेक्षवाद के नाम से जाना जाता था।
आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि स्टेनलैस स्टील का निर्माण भारत में हुआ था, यहीं से इस स्टील का निर्यात भी किया जाता था।

भारत और विज्ञान का सम्बन्ध बहुत गहरा है । देश के महान् गणितज्ञ आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कर इत्यादि ने देश में विज्ञान को एक नयी ऊँचाई तक पहुँचाया। यहाँ तक कि लेब्निज और न्यूटन से करीब 300 वर्ष पहले केल्क्यूलस का विकास भी भारत में हो चुका था।

अगर भारत में विज्ञान के विकास पर नजर डाली जाये, तो हमें यह देखने मिलता है कि देश ने विज्ञान के बलबूते पर विश्व के मानचित्र पर अपनी पहचान बना ली है। देश में विज्ञान के विकास को ध्यान में रखते हुए कई अनुसन्धान-केन्द्र खोल दिये गये हैं, जो अपने कार्यों को बखूबी निभा रहे हैं। ऐसे ही संस्थानों में से कुछ हैं - काउंसिल ऑफ साइण्टिफिक एण्ड इण्स्ट्रीयल रिसर्च, इण्डियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च, इण्डियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च आदि।

सन् 1947 में मिली आजादी के बाद से ही भारत तेजी से विज्ञान के क्षेत्र में आगे की ओर बढ़ रहा है। सन् 1983 में भारत सरकार द्वारा तकनीकी विकास को प्रोत्साहन देने के लिए एक नयी नीति बनायी गयी, जिसका मकसद तकनीकी विकास को बढ़ावा देना और उस तकनीक को सही तरीके से उपयोग में लेना था। सन् 1998 से लेकर 2005 तक इस नीति के माध्यम से 23 शोध कार्यक्रमों को आर्थिक सहायता के लिए मंजूरी दी गयी।

देश की आजादी के बाद से ही भारत सरकार द्वारा तकनीकी क्षेत्र को उन्नत बनाने के लिए कई प्रयास किये जा रहे हैं। आजादी के 50 वर्ष पूरे होने पर सरकार द्वारा स्वर्ण-जयन्ती प्रोग्राम प्रारम्भ किया गया, जिसके जरिये विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अग्रसर वैज्ञानिकों को विज्ञान सम्बन्धी शोध के लिए बेहतर सुविधा प्राप्त करायी जा सके।

विज्ञान के विकास को गतिशील करने के लिए विकास-मण्डल की सितम्बर 1996 में स्थापना की गयी। यह बोर्ड तकनीकी प्रोजेक्ट्स को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

देश में विज्ञान का विकास इसी तरह होता रहे एवं देश के नौजवान इस विकास में इसी तेजी से हिस्सा लेते रहें, इसके लिए अनेक तकनीकी संस्थानों में एण्टरप्रेन्योरशिप पार्क बनाये जा रहे हैं, जो नये उद्यमियों के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं।

आजादी के बाद भारत ने विज्ञान के क्षेत्र में जो उपलब्धियाँ हासिल कीं, वे बेमिसाल हैं। विशेषकर तब, जबकि अनगिनत समस्याएँ सामने खड़ी थीं। आगामी वर्षों में भारत प्रगति की नयी इबारत लिखेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

- आनन्द गुप्ता
(कक्षा-12 गणित)

आकाश में भारत

भारतीय अन्तरिक्ष-अनुसन्धान-केन्द्र (इसरो) ने प्रक्षेपण-यान (पी.एस.एल.व्ही.सी.-21) को प्रक्षेपित कर सौ उड़ानों का जादुई आँकड़ा छूकर दुनिया को बता दिया कि वह अब सुपर पॉवर बनने की क्षमता रखता है।

साठ के दशक में तिरुवनन्तपुरम के निकट थुम्बा के अड्डे से दागे गये रॉकेटों से हमारी अन्तरिक्ष-यात्रा शुरू हुई थी। शुरू में हमारा अन्तरिक्ष-कार्यक्रम प्रायोगिक व सांकेतिक उड़ानों तक ही सीमित था। हमें कुछ तकनीकी विफलताओं तथा अड़चनों का भी सामना करना पड़ा।

पी.एस.एल.व्ही. से जायेंगे मंगल पर -

पी.एस.एल.व्ही. इस समय हमारा सबसे विश्वसनीय रॉकेट है। इस उड़ान से पहले उसने लगातार 20 उड़ानें भरी थीं। पी.एस.एल.व्ही. का रिकार्ड बहुत ही शानदार रहा है। उसने हमें चाँद तक पहुँचाया, अब मंगल पर पहुँचायेगा। पी.एस.एल.व्ही. से चन्द्रयान-1 को लेकर 22 अक्टूबर, 2008 को उड़ान भरी थी। 28 अप्रैल, 2008 को उसने दस उपग्रहों को लगातार विभिन्न कक्षाओं में स्थापित करने का अनोखा कारनामा दिखाया था। 21 जनवरी, 2008 को उसने एक इजरायली जासूसी उपग्रह, टेस्कार को भी पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया। सौवें मिशन के लिए पी.एस.एल.व्ही. द्वारा छोड़े गये दो उपग्रहों में फ्रांस को बेहद उन्नत दूर-सम्वेदी-उपग्रह स्पॉट शामिल है, जिसका वजन करीब 700 किलो है।

दुनिया ने माना हमारा लोहा -

सौवीं उड़ान की कामयाबी से उपग्रहों के व्यावसायिक प्रक्षेपण बाजार में भारत की क्षमताएँ निश्चित रूप से और मजबूत होंगी। ध्रुवीय कक्षाओं और छोटे-छोटे उपग्रहों के मामले में इसरो ने अच्छी दक्षता हासिल कर ली है।

लम्बा सफर तय करना बाकी -

अन्तरिक्ष में लम्बी पारी खेलने के लिए इसरो को जी.एस.एल.व्ही. से भी आगे सोचना होगा। दो टन से ज्यादा वजन वाले उपग्रह छोड़ने के लिए भारत को विदेशी सहयोग लेना पड़ रहा है। इसरो यूरोप के एरियान-5 रॉकेट के मदद से तीन संचार उपग्रह छोड़ चुका है। संचार उपग्रह जीसैट-10 भी एरियान-5 रॉकेट के जरिये जल्दी ही छोड़ा जायेगा। रॉकेट टेक्नोलॉजी में भारत को अभी बहुत लम्बा सफर तय करना है।

अन्तरिक्ष की दौड़ में हमारा निकटतम प्रतिद्वन्द्वी चीन कई मामलों में हमसे बहुत आगे चल रहा है। दुनिया के अग्रणी अन्तरिक्ष राष्ट्रों की कतार में पहुँचने के लिए भारत को अभी कई चुनौतियों से निपटना पड़ेगा।

- कु. निशा अवस्थी (कक्षा-12 गणित)

प्रमुख चिह्न तथा प्रतीक

कलम	-	संस्कृत और सभ्यता का प्रतीक,
कमल का फूल	-	संस्कृति एवं सभ्यता,
रेडक्रास	-	डॉक्टरी सहायता एवं अस्पताल,
लाल झण्डा	-	क्रान्ति या खतरे का सूचक,
काला झण्डा	-	विरोध का प्रतीक,
पीला झण्डा	-	संक्रामक रोग-ग्रस्त लोगों को ले जाने वाले वाहन पर लगा झण्डा,
झुका झण्डा	-	राष्ट्रीय शोक का प्रतीक,
सफेद झण्डा	-	संधि या समर्पण का प्रतीक,
उल्टा झण्डा	-	संकट का प्रतीक,
लाल त्रिकोण	-	परिवार नियोजन का प्रतीक,
चक्र	-	प्रगति का प्रतीक।

- श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव
(उ.श्रे.शिक्षिका)

हमारा भारत

आज जो हम कहते हैं, वही कल होगा। वर्तमान की नींव पर भविष्य खड़ा होता है। हर आने वाला कल वर्तमान के द्वार से ही प्रवेश करता है। इसलिए कल के लिए वर्तमान का महत्त्व या भूमिका बहुत बड़ी होती है। यही बात हमारे देश भारत के लिए भी लागू होती है कि आज जो भारत है, वह कल का भारत होगा।

इस पर विचार करते हैं, तो हम यह देखते हैं कि आज भारत की जो स्थिति और स्वरूप है, उससे कुछ ही भिन्न स्वरूप आज से कई वर्षों के बाद होगा।

हम देखते हैं कि आज भारत वर्ष की जनसंख्या बेतहाशा बढ़ती जा रही है। इस पर नियन्त्रण पाना किसी के बस की बात नहीं है। यद्यपि सरकार ने विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों और उपायों को अपनाया है, फिर भी जनसंख्या की बाढ़ थमने का नाम नहीं ले रही है, इसलिए दस वर्षों बाद भी भारत विश्व का एक बहुत अधिक जनसंख्या वाला देश होगा। बेरोजगारी हमारे देश की एक भयंकर समस्या है। इस समस्या का समाधान करने के लिए सरकार के कमर कस लेने पर भी इस समस्या का समाधान नहीं हो रहा है, बल्कि यह और भी अधिक बढ़ती जा रही है।

जनसंख्या-वृद्धि और बेरोजगारी की तरह हमारे देश की दूसरी कष्टदायक समस्या है, भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार के अन्तर्गत आने वाले सभी प्रकार के आचारों का विस्तार हमारे देश में दिन दूनी-रात चौगुनी गति से हो रहा है। जब सरकार ही पूरी तरह से इसमें लिप्त है, तो फिर दूसरा कौन इससे मुक्ति दिला सकता है।

आज भारत में जो प्रान्तीयता, जातीयता, साम्प्रदायिकता और धार्मिकता का विष-बीज अंकुरित हो चुका है, वह निश्चय ही पल्लवित और पुष्पित होकर फलित होगा।

भविष्य में भारत विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में अन्तरिक्ष के कठिन रहस्यों की खोज करते हुए अपनी अलग खोज प्रस्तुत करेगा। इलेक्ट्रॉनिक्स की तरह मैकेनिकल क्षेत्र में भारत की अद्भुत पहुँच होगी। आजादी के बाद के भारत में भारत का परराष्ट्रीय सम्बन्ध बहुत गहरा होगा। यों कह सकते हैं कि भारत परराष्ट्रों का नेता होगा, क्योंकि वर्तमान दशा में उसकी यह स्थिति अत्यन्त पुष्ट और शक्तिशाली है।

इस प्रकार से परराष्ट्र-सम्बन्धों को मजबूत करता हुआ भारत विश्व का एक शक्तिशाली और महान् राष्ट्र होगा। आजादी के बाद इतने से थोड़े समय में भारत ने जो प्रगति और उन्नति की है, उसे देखते हुए हम कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी में भारत विकासशील राष्ट्र न होकर, विश्व का एक विकसित राष्ट्र होगा।

– **राहुल रैकवार** (कक्षा-12 एम-4)

आज का भारत

आजादी के बाद भारत ने विज्ञान के क्षेत्र में जो उपलब्धियाँ हासिल की हैं, वे बेमिसाल हैं। विशेषकर तब, जबकि अनगिनत समस्याएँ सामने खड़ीं थीं। विज्ञान का हमारे देश से बहुत पुराना सम्बन्ध रहा है और इसकी पुष्टि हमारा इतिहास भी करता है। वैदिक काल से ही भारत ने विज्ञान में अपना अस्तित्व बना लिया था। हालाँकि यह विकास उतनी तेजी से नहीं हुआ था, जितनी तेजी से आज हो रहा है। भारत के तत्त्वज्ञानियों ने कई साल पहले परमाणुवाद (ऐटोमैटिक थ्योरी) को विकसित कर लिया था। इस थ्योरी में ''थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी'' भी शामिल थी। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि स्टेनलैस स्टील का निर्माण भारत में हुआ था, यहीं से इस स्टील का निर्यात भी किया जाता था, जिसके फलस्वरूप डोमेस्कस स्टील का निर्माण हुआ। डोमेस्कस स्टील का, 1100 ए.डी. से लेकर 1700 ए.डी. तक, तलवार बनाने के लिए उपयोग किया जाता था। भारत और विज्ञान का सम्बन्ध यहीं समाप्त नहीं होता। देश के महान् गणितज्ञ आर्यभट्ट ने आर्यभट्ट-सिद्धान्तों को विकसित किया, जिनमें गुरुत्वाकर्षण गृहपथ के बारे में जानकारी दी गयी है और पृथ्वी के आकार के बारे में बताया गया है। 13 वीं और 14 वीं सदी में केरल ऑफ एस्ट्रोनॉमी एण्ड मैथमेटिक्स ने एस्ट्रोनॉमी और गणित के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण विकास किया। अगर भारत में विज्ञान के विकास पर नजर डाली जाये तो हमें यह देखने मिलता है कि देश ने विज्ञान के बलबूते पर विश्व के मानचित्र पर अपनी पहचान बना ली है। देश में विज्ञान के विकास को ध्यान में रखते हुए कई अनुसन्धान-केन्द्र खोल दिये गये हैं, जो अपने कार्यों को बखूबी निभा रहे हैं। ऐसे ही संस्थानों में से कुछ हैं - काउंसिल ऑफ साइण्टिफिक एण्ड इण्स्ट्रीयल रिसर्च, इण्डियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च, इण्डियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च आदि। इस प्रकार देखा जाये, तो आगामी वर्षों में भारत प्रगति की नयी इबारत लिखेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

– **राहुल जैन** (कक्षा-12 गणित)

कैरियर

नयी राहों का सुखद रोमांच

दुनिया तेजी से बदल रही है, लेकिन हमारा एज्युकेशन सिस्टम उसके हिसाब से बदलने की बजाय अभी बहुत पीछे है। आज के युवा की पहली जरूरत होती है कि वह कुछ ऐसा कोर्स करे, जिससे उसकी नॉलेज भी बढ़े और जिसके आधार पर उसे आसानी से जॉब मिल जाये। चूँकि दुनिया ग्लोबल विलेज में तब्दील हो गयी है, इसलिए हमारे सामने अब ढेर सारे विकल्प हैं। जो युवा टीचिंग, रिसर्च आदि में जाना चाहते हैं, उनके लिए पारम्परिक शिक्षा-प्रणाली कुछ उपयोगी साबित हो सकती है, लेकिन जो युवा रोजगारपरक शिक्षा चाहते हैं, उन्हें जॉब ओरियेण्टेड कोर्स ही करने चाहिए। चूँकि जॉब ओरियेण्टेड कोर्स मार्केट की डिमाण्ड पर आधारित होते हैं, इसलिए नौकरी मिलने की लगभग गारण्टी होती है। इनके अन्तर्गत प्रैक्टीकली वह सब बताया-सिखाया जाता है, जिनकी काम के दौरान जरूरत होती है। चूँकि ज्यादातर जॉब निजी क्षेत्रों में होते हैं, इसलिए काबिल और प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं को ज्यादा भटकना नहीं पड़ता। आज के बदलते जमाने में बिजनेस, मैनेजमेंट और टेक्नोलॉजी से जुड़े सभी कोर्स आज कहीं ज्यादा उपयोगी हो सकते हैं। इन कोर्सों में बी.बी.ए., एम.बी.ए., इकोनॉमिक्स व कॉमर्स से ग्रेजुएशन, हॉस्पिटैलिटी, होटल- मैनेजमेंट, टूर एण्ड ट्रैवल में डिग्री या डिप्लोमा, आई.टी. से जुड़े कोर्स (बी.सी.ए., एम.सी.ए. हार्डवेयर-नेटवर्किंग), मीडिया व एण्टरटेनमेंट पर आधारित कोर्स (मॉसकॉम, एन.एल.ई.), फोटोग्राफी आदि के नाम लिये जा सकते हैं। खास बात यह है कि बारहवीं के बाद भी ऐसे कोर्सों में प्रवेश लिया जा सकता है। हाँ, अगर समय और धैर्य है, तो मेरे विचार से ऐसा कोर्स करना चाहिए, ताकि कम-से-कम ग्रेजुएशन की डिग्री भी मिल सके। इससे आगे प्रमोशन पाने में मदद मिलती है। यदि आपको डिप्लोमा कोर्स के आधार पर नौकरी मिलती है, तो सैलरी 8 हजार से लेकर 15 हजार रुपये मासिक हो सकती है। अगर डिग्री कोर्स पूरा करके जॉब पाते हैं, तो आरम्भिक सैलरी 12 से 20 हजार रुपये मासिक हो सकती है। हाँ, मैनेजमेंट या इकोनॉमिक्स या वेब डिजायनिंग में डिग्री रखने वालों को 25-30 हजार रुपये मन्थली तक मिल सकता है। यदि फ्रीलांस या खुद का काम आरम्भ करते हैं, तो आरम्भ में 10-20 हजार रुपये और अनुभव व काम बढ़ने में अनलिमिटेड अर्निंग कर सकते हैं।

- **प्रो. जे. एस. राजपूत** (प्रतियोगिता साहित्य से साभार)

परीक्षा पास कर लेना ही सफलता नहीं

अरे यार, सुरेश तू यहाँ ? परसों तेरे एग्जाम शुरू हो रहे हैं और तू यहाँ दोस्तों के साथ पिक्चर देखने आया हुआ है ? अशोक ने सुरेश से पूछा, तो वह हँसता हुआ बोला - यार अपना स्टाइल दूसरे लड़कों से थोड़ा अलग है । वे सालभर किताबों में आँखें फोड़ने वाले भोन्दू होते हैं। हम तो वनडे सीरिज से मोस्ट इम्पोर्टेण्ट प्रश्न तैयार करके पेपर देने वाले स्मार्ट फैलो हैं।

कहने को तो सुरेश ने शेखी बघार दी, पर जब रिजल्ट आया, तो उसका चेहरा देखने लायक था। सालभर मौजमस्ती करने में समय बरबाद करने वाले लड़कों की तरह उसने भी इधर-उधर से कुंजियाँ आदि पढ़कर पेपर दिये थे, जबकि वास्तव में परीक्षा में पूछे गये प्रश्न में एक भी प्रश्न इन कुंजियों के आधार पर नहीं दिया गया था। ऐसे में सुरेश के पास कॉपी में बिना कुछ लिखे उसे कोरी-की-कोरी छोड़कर बाहर आने के अलावा कोई चारा नहीं था और इस प्रकार उसका पूरा साल बरबाद हो गया।

वैसे देखा जाये, तो केवल चुनिन्दा सवाल रटकर या वनडे या वन वीक सीरिज पढ़कर परीक्षा देना खुद के पाँव पर कुल्हाड़ी मारने जैसा ही है। ऐसे छात्रों का पढ़ाई से कोई वास्ता नहीं होता। उनका एकमात्र लक्ष्य परीक्षा को येन-केन-प्रकारेण उत्तीर्ण कर लेने तक ही सीमित होता है। अव्वल तो ऐसे छात्र परीक्षा पास ही नहीं कर पाते, अगर तुक्का लग जाने से पास भी हो गये, तो आगे चलकर उनकी गाड़ी रुक जाती है।

किसी काम्पीटिशन में बैठते ही इन्हें अपनी स्थिति का सही अन्दाजा हो जाता है, कि वे कितने पानी में हैं, ऐसे में परीक्षा के दौरान ज्ञान का अभाव उन्हें सफलता से कोसों दूर ले जाता है, तब उन्हें एहसास होता है कि छात्र-जीवन में यदि उन्होंने रटन्त विद्या से परीक्षा पास करने के बजाय सही ढंग से अध्ययन किया होता, तो आज उन्हें इस तरह की असफलता का सामना नहीं करना पड़ता।

बीता समय कभी लौटकर नहीं आता, इसलिए विद्यार्थियों को वर्ष-भर मन लगाकर पढ़ना चाहिए, ताकि उन्हें विषय का समुचित ज्ञान हासिल हो सके। उनका लक्ष्य केवल परीक्षा में पास होने भर का नहीं होना चाहिए। यह शॉर्टकट आगे चलकर उन्हें परेशान करने वाला होता है।

कड़ी प्रतिस्पर्धा के इस दौर में हर कोई आगे निकलने की होड़

में पूरी क्षमता के साथ प्रयत्नशील रहता है, तब जाकर कहीं सफलता मिलती है।

किसी एक पद के लिए कई हजार गुना आवेदनों के पहुँचने से यह बात सिद्ध होती है कि प्रतिस्पर्द्धा कितनी कड़ी है। इन आवेदकों में बहुत बड़ी तादाद ऐसे उम्मीदवारों की होती है, जिनके पास वाँछित डिग्री तो होती है, पर समुचित ज्ञान नहीं होता। ऐसे में इन उम्मीदवारों के लिए सफलता हासिल कर पाना लगभग असम्भव हो जाता है। हर जगह जब उन्हें असफलता मिलती है तो वे मायूय हो जाते हैं। अपनी इस हालत के लिए वे कहीं-न-कहीं खुद जिम्मेदार होते हैं, जिन दिनों उन्हें केवल परीक्षा पास भर कर लेने की चाहत थी, उन दिनों यदि उन्होंने ठीक से पढ़ाई की होती, तो वे सही मायनों में प्रतियोगी परीक्षा में बैठने के हकदार होते।

किशोरावस्था में भविष्य की नींव मजबूत करने का सर्वोत्तम समय माना गया है। किशोरों को चाहिए कि वे इस स्वर्णिम समय का भरपूर उपयोग ज्ञान और विज्ञान सहित अधिक-से-अधिक खुद को परिमार्जित करने में करें। वैसे तो सीखने की कोई उम्र नहीं होती, पर सही समय पर किया गया कार्य सफलता दिलाता है। इस समय को व्यर्थ के कामों में लगाने की भूल कदापि न करें।

परीक्षा यह बताती है कि आप कितने पानी में हैं। आपकी समझ में स्वयं आ जायेगा कि आपको किसी विषय का कितना ज्ञान है। जब ज्ञान पर ही आपका पूरा भविष्य टिका हो, तो केवल परीक्षा को पास कर लेने की संकीर्ण मानसिकता को तिलांजलि देनी ही होगी। परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर आप डिग्री तो हासिल कर लेंगे, पर योग्यता नहीं। योग्यता के बगैर आपका जीवन कोरे कागज की तरह रह जायेगा। आपको यह मालूम है न कि कोरे कागज की कीमत रद्दी कागज से ज्यादा नहीं होती। आज के इस दौर में कौन रद्दी कागज बनना चाहेगा ।

- इन्द्रजीत कौशिक,

(नवांकुर पुस्तकालय-सुमन सौरभ से साभार)

क्या आप जानते हैं ?

1. एक ऐसी नाव, जिसका सफर परेशानी भरा हो - तनाव,
2. वह कौन-सी कार है, जो हर माता-पिता अपने बच्चों को देते हैं - संस्कार,
3. ऐसा कान, जिसके कारण सभी विश्राम चाहते हों - थकान,
4. ऐसा शक, जो भीड़ में उत्पन्न होता है - दर्शक,
5. वह बल, जो बिजली को भी पी लेता है - केबल।

- कु. आकांक्षा चौधरी (कक्षा-8 एफ)

कम्प्यूटर के क्षेत्र में कैरियर

वर्तमान में कम्प्यूटर की छोटी-बड़ी सभी डिग्रियों का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। ऐसा कोई भी जॉब नहीं है, जिसमें कम्प्यूटर की उपयोगिता न हो। चाहे जॉब Centrel Govt.का हो या State Govt. का हो या प्रायवेट सेक्टर का हो। ऐसे में कम्प्यूटर से सम्बन्धित कोर्सेस की जानकारी होना आवश्यक है। कुछ डिप्लोमा एवं डिग्री कोर्सेस की जानकारी यहाँ दी जा रही हैं:-

कम्प्यूटर से जुड़े कुछ प्रमुख स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमः-

देश में कई कम्प्यूटर पाठ्यक्रम शासकीय और अशासकीय क्षेत्र में चलाये जा रहे हैं। Polotechnic कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में कम्प्यूटर के डिप्लोमा पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। कम्प्यूटर के क्षेत्र में संचालित पाठ्यक्रम में बेचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (B.C.A.) और मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (M.C.A.) पाठ्यक्रम प्रमुख हैं।

रोजगार के अवसर :-

B.C.A. या M.C.A. के उपरान्त रोजगार की बहुत सम्भावनाएँ है। राष्ट्रीय-बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का देश-विदेश में कम्प्यूटर विशेषज्ञों की हमेशा आवश्यकता रही है। भारतीय सेनाओं में अधिकारी बनने की इच्छा रखते हैं, तो वहाँ भी उसके लिए अवसर है। भारतीय थल-सेना, वायु-सेना, नौसेना में, कम्प्यूटर में दक्ष युवक-युवतियों की, विशेष भर्ती होती है।

1. **बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (B.C.A)**
   योग्यता 10+2 (विज्ञान वर्ग से) पाठ्यक्रम अवधि-3 वर्ष।
2. **मास्टर ऑफ कम्प्यूटर (M.C.A.)**
   योग्यता 10+2 पाठ्यक्रम अवधि-2 वर्ष।

प्रमुख संस्थाएँ - दोनों पाठ्यक्रम रेगुलर तथा पत्राचार दोनों माध्यम से उपलब्ध हैं। कुछ प्रमुख संस्थानों की सूची निम्नांकित है-

इन्दौर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय- नयी दिल्ली-दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल विश्वविद्यालय, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, सागर- डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, आगरा-डॉ.बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय।

मास्टर ऑफ कम्प्यूटर (M.C.A.) पाठ्यक्रम में प्रवेश- मध्यप्रदेश व्यावसायिक परीक्षा मण्डल (व्यापम)भोपाल, मध्यप्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में चलाये जा रहे (M.C.A.)पाठ्यक्रमों के लिए प्रतिवर्ष एक प्रवेश-परीक्षा आयोजित करता है, जिसमें चयनित छात्र मेरिट के

आधार पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से (M.C.A.) पाठ्यक्रम की डिग्री प्राप्त करते हैं। (M.C.A.) पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु 12 वीं स्तर तक गणित होना आवश्यक है। M.C.A. में 6 वर्षीय पाठ्यक्रम (12वीं के पश्चात्) इण्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में उपलब्ध है।

कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं नेटवर्किंग इंजीनियरिंग - वर्तमान समय में कम्प्यूटर का उपयोग दिन -प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। आज कम्प्यूटर हमारे दैनिक जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। सभी शासकीय-अर्द्धशासकीय एवं निजी उपक्रमों में कम्प्यूटर का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं नेटवर्किंग क्षेत्र में रोजगार एवं स्वरोजगार की बहुत सम्भावनाएँ हैं, कम्प्यूटर-क्षेत्र में आयी क्रान्ति जैसे इण्टरनेट, मोबाइल फोन, ए.टी.एम. आदि के कारण कम्प्यूटर के कई महत्त्वपूर्ण भागों को सुधारने के लिए दक्ष एवं कुशल रिपेयरिंग इंजिनियरों की आवश्यकता हमेशा रहती है। हार्डवेयर एवं नेटवर्किंग के साथ रिपेयरिंग सीखना भी आवश्यक है।

प्रमख संस्थान:- कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, भोपाल-जेटकिंग, 101-104, राधाकृष्ण कॉम्प्लेक्स, गीताभवन इन्दौर। आई.आई.टी. दिल्ली।

कम्प्यूटर आधारित कुछ प्रमुख कैरियर निम्नांकित हैं- डाटा एण्ट्री सर्विस, काल सेण्टर एवं आउट सोर्सिंग प्रोग्राम पैकेज के डिस्ट्रीब्यूटर, स्टॉक मार्केट, इलेक्ट्रॉनिक से जुड़ी बुक कीपिंग सर्विस, कम्प्यूटर पर ज्योतिष, ब्रोशर्स बनाना, मेलिंग सर्विस, टेम्स रिटर्न सेवा, बुक इण्डेक्सिंग सर्विस, टाइप सेटिंग।

- ***ओ.पी.श्रीवास्तव***, कैरियर सम्पादक

14 November - Children's Day

(Jawaharlal Nehru Birthday)

C	-	Confidence	-	विश्वास,
H	-	Humour	-	हंसाने की क्षमता,
I	-	Intellegent	-	बुद्धिमान्,
L	-	Lore	-	शिक्षा,
D	-	Desicipline	-	अनुशासन,
R	-	Reality	-	सत्यता,
E	-	Elity	-	उन्नति,
N	-	Nice	-	अच्छा,
S	-	Student	-	विद्यार्थी,
D	-	Duteour	-	आज्ञापालक,
A	-	Able	-	क्षमता,
Y	-	Young & Energetic	-	युवा और ऊर्जावान्।

- अमन श्रीवास्तव
(कक्षा-11 वाणिज्य)

छात्रों की कलम

कृपया, इसे मत पढ़िये

कृपया, इसे मत पढ़िये, क्योंकि इसे पढ़कर आपको कुछ भी हासिल नहीं होगा। विश्वास कीजिये आपको इसे पढ़ने में कुछ भी नहीं मिलेगा। कभी तो आप हमारी बात पर विश्वास कर लिया कीजिये। आप तो पढ़े-लिखे हैं, मान भी जायें, इसे मत पढ़िये भाई, कभी तो किसी की बात मान लिया कीजिये। अरे! आपने तो पढ़ना जारी रखा हुआ है। देखिये प्लीज, मान जाइये, यूँ ही अपना वक्त बेकार मत कीजिये। आप बहुत जिद्दी हैं, मेरे बार-बार मना करने पर भी आपने इसे पढ़ना जारी रखा है। अच्छा चलिये, जितना पढ़ लिया है, उतना ही रहने दीजिये, बस कीजिये। आगे मत पढ़िये। लगता है, आप हार नहीं मानेंगे। आप तो भाई अपनी जिद पर अड़े हुए हैं। लगता है, आप पढ़ना कभी बन्द नहीं करेंगे। आखिर आपने पढ़ ही लिया, क्या मिला ? यूँ ही अपना समय बर्बाद किया न? काश ! आपने मेरी बात पहले ही मान ली होती। आप तो अब भी पढ़े जा रहे हैं। लगता है, आप पढ़ना बन्द नहीं करेंगे, अत: मैं ही लिखना बन्द कर देता हूँ।

- अक्षय श्रीवास्तव, (कक्षा-6)

क्यों जरूरी है, पूर्ण विराम ?

एक स्त्री थी। उसके पति आई. टी. आई. में कार्यरत थे। वह अपने पति को पत्र लिखना चाहती है, पर अल्पज्ञानी होने के कारण उसे यह पता नहीं होता है कि पूर्ण विराम कहाँ लगेगा। इसलिए उसका जहाँ मन करता, वहीं पूर्ण विराम लगाती और इस प्रकार वह चिट्ठी लिखती है -

"मेरे प्यारे जीवनसाथी मेरा प्रणाम आपके चरणों में। आपने अभी तक चिट्ठी नहीं लिखी मेरी सहेली को। नौकरी मिल गयी है हमारी गाय ने। बछड़ा दिया है दादाजी ने। शराब शुरू कर दी मैंने। तुमको बहुत खत लिखे पर तुम नहीं आये कुत्ते के बच्चे। भेड़िया खा गई दो महीने का राशन। छुट्टी पर आते वक्त ले आना एक खूबसूरत औरत। मेरी सहेली बन गयी है और इस वक्त टी.वी. पर गाना रही है हमारी बकरी। बेच दी गयी है तुम्हारी माँ। तुमको याद कर रही है एक पड़ोसन। हमें बहुत तंग करती है तुम्हारी बहिन। सिर दर्द से लेटी है तुम्हारी पत्नी।"

- कु. दिव्या पटैल, (कक्षा-10)

इण्टरनेट

फैल रहा है सारी दुनिया में, इण्टरनेट का जाल,
कम्प्यूटर तकनीकी की, यह है चीज कमाल।
सारी दुनिया हुई सिकुड़कर, इण्टरनेट में बन्द,
बड़े काम की चीज तभी तो करते सभी पसन्द।
इण्टरनेट ने दी मानव को, सुविधाएँ भरपूर,
घर बैठे सब कुछ मिल जाये, हो कठिनाई दूर।
इण्टरनेट ने दिया ज्ञान का, मनभावन उपहार,
खेल, फिल्म, साहित्य, कला का है इसमें भण्डार।
कई तरह की सेवाएँ भी, हैं इसमें उपलब्ध,
इण्टरनेट के चमत्कार से, हुए सभी स्तब्ध।
तरह-तरह के होते इसमें, लाइव टेलीकास्ट,
डॉट-कॉम का युग आया, हुआ जमाना फास्ट।

– **अनुभव जैन** (कक्षा-11)

जगत में नहीं कोई परमानेण्ट

जगत में नहीं कोई परमानेण्ट,
एक दिन सबको जाना पड़ेगा, बात मान पेशेण्ट।
करके श्रृंगार घूमते, बनकर अप-टू-डेट।
एक दिन मरघट पे सोचेगा, कोई नहीं रेस्टोरेण्ट।
सत्संग के स्कूल का, भैया बन जा स्टूडेण्ट।
झूठ-कपट-छल-दम्भ-काम से, मतकर एक्सीडेण्ट।
गुरु-चरण की शरण में, भैया बनते एप्लीकेण्ट।
इण्टरव्यू आते ही, बनेगा ईश्वर का सर्वेण्ट।
यम के दूत देर नहीं करते, चलना पड़े अर्जेण्ट।
पर उपकारी एडवोकेट से, करते सैटिलमेण्ट।

– **दीपांशु रिछारिया** (कक्षा-12 गणित)

बापू

सत्य-अहिंसा-प्रेम-शान्ति का,
वह था एक पुजारी।
उसके सम्मुख अंग्रेजों की, सारी सत्ता हारी।
सब धर्मों का प्रेमी वह था, राष्ट्रपिता कहलाता।
बोलो कौन पुरुष था वह, जो रघुपति राघव गाता।

– **कु. वैशाली बघेल** (कक्षा-2)

बचपन

एक बचपन का जमाना था,
खुशियों का खजाना था।
चाहत चाँद को पाने की,
दिल तितली का दीवाना था।
खबर न थी कभी, सुबह की,
और न ही शाम को, ठिकाना था।
थक-हार के आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था।
दादी की कहानी थी,
परियों का फसाना था।
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था।
हर खेल में साथी थे,
हर रिश्ता निभाना था।
गम की जुबान न होती थी,
न ही जख़्मों का पैमाना था।
रोने की वजह न थी,
न हँसने का बहाना था।
अब नहीं रही वो जिन्दगी,
जैसा बचपन का जमाना था।

– **कु. दीक्षा डेरिया**
(कक्षा-12 गणित)

बदल गया इंसान

कुत्ते को घुमाना याद रहा, गाय की रोटी भूल गये।
ब्यूटी पार्लर याद रहा, लम्बी चोटी भूल गये।।
रिमोट कण्ट्रोल याद रहा, बिजली का खटका भूल गये।
फ्रिज का पानी याद रहा, मटके का पानी भूल गये।
बोतल और पाऊच याद रहा, प्याऊ का पानी भूल गये।
टी.वी. सीरियल याद रहा, दादी की कहानी भूल गये।
हैलो-हाय याद रहा, नम्र प्रणाम भूल गये।
अंकल-आण्टी याद रहे, काका-काकी भूल गये।
जींस-टीशर्ट याद रहे, धोती पायजामा भूल गये।
दोस्त-यार याद रहे, सगे भाई को भूल गये।।

– **विशाल दाँगी** (कक्षा 8)

माँ-बाप

माँ-बाप को ठुकराओगे, दर-दर की ठोकर खाओगे।
नाजों से पालने वालों पर, तू अत्याचार न कर।।
जिस रोज ये बिछुड़ेंगे तुमासे, उस रोज बड़े पछताओगे।
उनसे पूछो माँ-बाप हैं क्या, जिन लोगों के माँ-बाप नहीं।।
माँ-बाप को पीड़ा पहुँचाना, कोई इससे बड़ा तो पाप नहीं।
तन-मन से करो इनकी पूजा, ये दूजा रूप हैं ईश्वर का।।
जब तुम बूढ़े हो जाओगे, क्या सुख सन्तान से पाओगे।
वैसे ही तो फल पाओगे, जैसे तुम पेड़ लगाओगे।।
माँ-बाप बड़ी दौलत अपनी, ये बात याद रखनी हमको।
ये बात याद रखनी हमको, जैसी करनी वैसी भरनी।।
माँ-बाप का दिल जो दुखाओगे, क्या सुख सन्तान से पाओगे।
माँ-बाप की पहले सेवा करो, सन्तान से सुख पाओगे।।
माँ-बाप को ठुकराओगे, दर-दर की ठोकर खाओगे।

- कु. पूजा रघुवंशी
(कक्षा-10)

माँ से दूरी क्यों ?

बचपन में जब आँसू आते थे तो .....
माँ की याद आती थी,
जवानी में जब माँ की याद आती है,
तब माँ की याद आती है।
फिर माँ से दूरी क्यों ?
यही कहा जाता है कि
छः साल का है लाड़ला,
यदि तेरे प्रेम की प्यास रखें,
तो साठ-साल के तेरे माँ-बाप
के सहारे की आस क्यों न रखें ?
हमारे जीवन में दो का अन्त नहीं है
ऊपर आसमाँ और जहाँ में माँ,
फिर माँ से दूरी क्यों ?
इसलिए तो कहा जाता है कि
ईश्वर सभी जगह नहीं पहुँच पाया,
तो उसने माँ को बनाया।।

- कु. पूनम दाँगी
(कक्षा-10)

डेवलपमेण्ट

देश में डेवलपमेण्ट हो रहा है,
बेटा-बाप से इण्टेलिजेण्ट हो रहा है।
अमीरों का काम अर्जेण्ट हो रहा है।
गरीब बेचारा साइलैण्ट हो रहा है।
देश में डेवलपमेण्ट हो रहा है।
घर-घर में पार्लियामेण्ट् हो रहा है।
रिश्वत से कार्य हैण्ड-टू-हैण्ड हो रहा है।
ईमानदार बेचारा सस्पेण्ड हो रहा है।
मालिक बेचारा सर्वेण्ट हो रहा है।
प्रदूषण आज हण्ड्रैड परसेण्ट हो रहा है।
देश में डेवलपमेंट हो रहा है।
संसद-भवन में एग्रीमेण्ट हो रहा है।
चोरी-डकैती परमानेण्ट हो रहा है।
देश में डेवलपमेंट हो रहा है।

- कु. दीपिका रघुवंशी
(कक्षा-11 जीवविज्ञान)

नयी क्रान्ति

आज के इस युग में कहाँ है, गाँधी की टोली ?
साथ में जिसे लिये हुए, चलती थी गीता की हमजोली।
रामदेव अन्ना भी गये, सरकार की इस खटाई में।
शांति के साथ चतुराई भी गयी, भ्रष्टाचार की लड़ाई में।
नहीं मिला मुकाम अब तक, जिसकी हमें तलाश थी।
क्रान्ति अब वो फिर छिड़ेगी, जो सन् 47 की आवाज थी।
अंग्रेज डर के भागे थे, जनता के आगे काँपे थे।
वही जनता फिर जागेगी, सरकार को मिलकर फिर नापेगी।
आवाज सत्याग्रह की कहीं नहीं, गरमजोशी का दबाव था।
तभी देश आजाद हुआ था, जिससे भारत का गुमान हुआ था।
यह तो सत्याग्रह की आवाज है, गरमजोशी अभी हुई कहाँ ?
इतने में सरकार लुट गयी है, नौजवान उतरेंगे तो ये भागेंगे कहाँ ?
अन्तिम समय तक चलेगी लड़ाई, भ्रष्ट नेताओं पर होगी कड़ाई।
जंग हार सकते कभी नहीं, है भ्रष्टाचार की पहली लड़ाई।
झुक जायेगी ये सरकार, फँस जायेंगे शातिर मन्त्री।
आखिर कब तक झूठी शान रहेगी, भ्रष्टाचार अब अब नहीं चलेगा।

- अभिषेक मिश्रा
(कक्षा-12 गणित)

पिता

पिता जीवन है, सम्बल है, शक्ति है।
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है।।
पिता से ही बच्चों की ढेर सारे सपने हैं।
पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं।।
पिता अपनी इच्छाओं का हनन और परिवार की पूर्ति है।
पिता रक्त में दिए हुए संस्कारों की मूर्ति है।।
पिता की कमी को कोई पाट नहीं सकता।
परमपिता भी उनके आशीषों को काट नहीं सकता।।
हवा जब गुनगुनाती है, कोई सन्देश लाती है।
पिता की प्रेरणा हमको, निरन्तर पथ दिखाती है।।

- कु. प्रज्ञा श्रीवास्तव
(कक्षा-9)

पुस्तक बोली

बच्चों ने अब पुस्तक खोली,
उसमें से कविता भी डोली।
पाठ ने भी मुस्कान बिखेरी,
गणित की भी बिछी रंगोली।
महापुरुष का पाठ है उसमें,
धरती का भी राज है उसमें।
विज्ञान की है खोज सुहानी,
खेती की है कुमकुम-रोली।
संस्कृति की पहचान है पुस्तक,
ज्ञान की आवाज है पुस्तक।
खोलो मुझको पुस्तक बोली,
पुस्तक हमसे कुछ नहीं लेती,
पढ़ो-लिखों तो सब कुछ देती।
मुझको पढ़ कर महान् बनें सब
हँसते-हँसते पुस्तक बोली।

संकलित - शरद विश्वकर्मा
(कक्षा-3)

सर्दी आई !

सर्दी आई, सर्दी आई,
ठण्ड की बहार है छाई।
स्वेटर, कम्बल और रजाई,
मन को बड़े भाते हैं भाई।
गरम पकोड़े, गुलाबजामुन और हलवा,
खाने को जीभ ललचाई।
सूरज दादा देर से आते,
फिर भी चमक नहीं फैलाते।
हम ठण्ड से ठिठुरे जाते,
आग सेंककर गर्मी पाते।
सुबह-सुबह नींद से उठता,
आफत बहुत बड़ी लगती है।
स्कूल से कोई छुट्टी मिले तो,
राहत बहुत बड़ी लगती है।
क्रिसमस, लोहड़ी, संक्रान्ति त्यौहार है लाई,
कोहरे की चादर फैलाई।
ठण्ड की बहार है आई,
सर्दी आई, सर्दी आई।।

संकलित - कु. अनुमति जेतली
(कक्षा-3)

तीन बातें हमेशा याद रखें

- ❒ तीन चीजें किसी का इन्तजार नहीं करतीं - समय, मौत, ग्राहक
- ❒ तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं - माँ, बाप, जवानी
- ❒ तीन चीजें निकलने पर वापस नहीं आतीं - तीर कमान से, बात जुबान से, प्राण शरीर से
- ❒ तीन चीजें परदे में रखने योग्य हैं - धन, स्त्री, भोजन
- ❒ तीन चीजों से बचने की कोशिश करनी चाहिए - बुरी संगति, स्वार्थ, निन्दा
- ❒ तीन चीजों में मन लगाने से उन्नति होती है - ईश्वर, परिश्रम, विद्या
- ❒ तीन चीजों को कभी नहीं भूलना चाहिए - कर्ज, मर्ज, फ़र्ज
- ❒ तीन चीजों का सम्मान करना चाहिए - माता, पिता, गुरु
- ❒ तीन को हमेशा याद रखो - काम, लोभ, मद
- ❒ तीनों पर सदा दया करो - बालक, भूखे, पागल पर

- लोकेश कुर्मी (कक्षा-7)

योग एवं संगीत-चिकित्सा

योग के आठ अंग, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, समाधि आदि हैं। समाधि को संगीत-साधना द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि संगीत में गायन भी, प्राणायाम एवं समाधि (मन की एकाग्रता) का ही रूप है। गायन, वादन तथा नृत्य में गायन को सर्वश्रेष्ठ इसलिए कहा गया है कि गायन द्वारा स्वत: ही प्राणायाम-साधना होती है। दूसरे शब्दों में आसनों से प्राप्त होने वाले लाभ संगीत से प्राप्त होते हैं। संगीत द्वारा मन की एकाग्रता (समाधि) के लाभ भी अनेक हैं। राग, ध्यान, शब्द तथा ताल आदि के द्वारा मन की एकाग्रता सूक्ष्म समय में ही प्राप्त हो जाती है। ये सब बातें सिर्फ शास्त्रीय संगीत पर लागू होती हैं, आधुनिक संगीत का स्वरूप योग से कोसों दूर जा चुका है।

शास्त्रीय संगीत में आसन में बैठने की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे साँस लेने की उत्तम क्रिया आसानी से होती है। संगीत के द्वारा मस्तिष्क रोग, स्नायु-रोग, रक्तचाप, श्वाँस-रोग, गुर्दा, फेफड़े आदि के रोगों को आसानी से समाप्त किया जा सकता है। यह सभी को मालूम है कि ये सब रोग प्राणायाम के द्वारा ठीक हो सकते हैं। अत:, यह कहना ठीक होगा कि जिस दिन संगीत को यौगिक क्रिया के रूप में प्रतिपादित किया जा सकेगा, संगीत की शक्ति दोगुनी हो जायेगी।

संकलित - कु. वैष्णवी दुबे
(कक्षा-4)

आओ सुनाते हैं देश का हालचाल

आओ सुनाते हैं देश का हालचाल,
भ्रष्टाचार ने कर दिया देश का खस्ताहाल।
नेता अफसरों पर चढ़ा भ्रष्टाचार का भूत,
अब तो सेना में भी होने लगी है लूट।
कुछ लोगों ने मचाया धमाल,
कुछ लोग घोटाले से हो गये मालामाल।
मन्त्रियों ने बदल दिया भ्रष्टाचार का ढंग,
और मँहगाई ने कर दी जनता की झोली तंग।
जनता को लूट विदशों में जमा किया धन,
फिर भी सभी नेता हैं चुपचाप।
देशभक्तों ने छेड़ा आन्दोलन निराला,
सरकार की तिकड़ी ने इनको धो डाला।
आओ सब छेड़ें मिलकर नयी तरंग,
मिलजुल कर करना है भ्रष्टाचार बन्द।।

- अरुण रघुवंशी, (कक्षा-11 गणित)

बिटिया

बिटिया तुम तो बहुत सयानी हो,
तुम्हें रहती है परवाह हमेशा माँ की,
पिताजी के गरम खाने की।
भाई के होमवर्क की,
दादा की ऐनक पर जमने वाली धूल की,
दादी के लिए सुबह-सुबह
पूजा के लिए फूल लाने की ।
बहुत परवाह करती हो ना तुम सभी की.....

और तुम ..... तुम्हारी परवाह .....
तुम्हारी परवाह तो तुम ही
कभी-कभार कर लिया करती हो..... क्यों ?
तुम्हारा बर्थ-डे तो घर में किसी को याद नहीं रहता,
तुम्हीं याद दिलाती हो ना सभी को .... ?
और बस, माँ खीर बना देती है तुम्हारे बर्थ-डे पर
सभी का मुँह मीठा कराने के लिए,
क्योंकि माँ को परवाह है तुम्हारी.....
तुम्हें लालसा नहीं रहती है,
अपने बर्थ-डे गिफ्ट की ।
क्योंकि तुम सयानी हो,
मौन-सी..... गुमसुम सी.....

संकलित - कु. सृष्टि दुबे
(कक्षा-11 जीवविज्ञान)

जो धनलाभ शुभ ढंग से होता है, वह दूध जैसा है और जो बेईमानी, मिलावट से होता है, वह पानी जैसा है।

गाँधी जी फिर से आइये

गाँधी जी फिर से आइये, धरती पे एक बार,
फिर सत्य को प्रचारिये, धरती पे एक बार।
हिंसा का दौर चल रहा गुमसुम है,
मानवता को फिर जगाइये, धरती पे एक बार।
आतंकियों का देखो, यहाँ हो रहा शासन,
नेता भी देखो यहाँ बन रहे हैं दुश्शासन।
देश में चारों तरफ है, आतंक–ही–आतंक।
आतंक को मिटाइये, धरती से एक बार।
गाँधीजी फिर से आइये, धरती पे एक बार।
आपके समय में हुआ देखो ऐसा चमत्कार
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई थे भाई–चार।
कैसी ये काया पलटी, वो हुए अलग एक बार।
एकता को फिर से जगाइये, धरती पे एक बार।
गाँधी जी फिर से आइये, धरती पे एक बार।
देश की गली–गली में अत्याचार हो रहे।
नेताओं के द्वारा भ्रष्टाचार हो रहे।
हजारों लोग आज बेगार हो रहे।
भ्रष्टाचार को मिटाइये, धरती से एक बार।
गाँधीजी फिर से आइये, धरती पे एक बार।।

संकलित - संदीप विश्वकर्मा
(कक्षा–6)

हाथी

जींस पहनकर निकला हाथी,
साथ चले थे उसके साथी।
जींस थी भूरी, बैल्ट थी काली,
हाथी पर लगती थी निराली।
सिर पर टोप गले में टाई,
यह सब देख हथिनी चिल्लाई।
क्यों बनते हो हीरो हाथी जी,
लगते तुम सबके दादाजी।
जींस छोड़ धोती में आओ,
अब तो भारतीय संस्कृति अपनाओ।

संकलित - **कु. तनु रघुवंशी**, (कक्षा–3)

आज का मनुष्य

कोई टोपी तो कोई अपनी पगड़ी बेच देता है,
मिले अगर भाव अच्छा जज भी कुर्सी बेच देता है।
जला दी जाती है ससुराल में अक्सर वही बेटी,
जिस बेटी की खातिर बाप किडनी बेच देता है।
माना है जिसे बढ़कर ईश्वर से भी
वही किडनी निकालकर डॉक्टर बेच देता है।
ये कलयुग है कोई भी चीज नामुमकिन नहीं,
इसमें कली, फल, पेड़, पौधे, फूल माली बेच देता है।
उसे इन्सान क्या हैवान कहने में भी शर्म आये,
जो पैसों के लिए अपनी ही बेटी बेच देता है।
पलते हैं जिस माँ के समान गाय के दूध से,
बना उसी के चर्म से पर्स, बेल्ट, मोबाइल कवर,
ग्वाला बेच देता है।
जुए में बिक गया हूँ मैं, तो हैरत क्या है लोगों को,
युधिष्ठिर तो जुए में अपनी पत्नी बेच देता है....।

- **दीपक सेन** (कक्षा–12 गणित)

बेईमानी का भाव

एक बार एक राजा ने विचार किया कि मेरे नगर में एक दूध का कुण्ड हो, जिसमें दूध सदैव भरा रहे। पूर्णिमा की रात में जब चन्द्रमा की रश्मियाँ उस पर गिरेंगी, तो उसके सौन्दर्य का आनन्द सभी नगर–निवासी उठायेंगे। राजा ने पूरे नगर में घोषणा करवा दी कि नगर का प्रत्येक नागरिक आज शाम को एक–एक लोटा दूध लाकर नव–निर्मित कुण्ड में डाले। राजाज्ञा का पालन तो सभी को करना ही था। एक व्यक्ति ने सोचा कि नगर के सारे लोग दूध लायेंगे ही, यदि मैं दूध के बदले उसमें एक लोटा पानी ले जाकर डाल दूँ, तो किसको क्या पता चलेगा?

वह शाम ढलने के बाद एक लोटा जल कुण्ड में डाल आया। यही विचार अन्य लोगों के मन में भी पैदा हुआ। सबने यही किया। सबेरे जब राजा उस कुण्ड के पास पहुँचा, तो वह हैरान रह गया कि मैंने इस कुण्ड में दूध डालने की राजाज्ञा प्रसारित की थी, लेकिन इसमें तो जल भरा हुआ है, राजा ने अपने प्रधानमन्त्री से बात की और इसका कारण पूछा, तो वह बोला– "महाराज! नगर के एक व्यक्ति के मन में बेईमानी का भाव जागा, तो उसके भावों के परमाणु पूरे नगर तक पहुँच गये और दूध के स्थान पर जल का कुण्ड बन गया।

– संदीप जेतली (व्याख्याता)

डॉल्फिन स्कूल से

Caution from Toffess

Now-a-days on the name of toffees, We are eating fragrant, tasty poison. It is being a habit of child to eat toffees. It creates a headechc known as 'Migran' which can be harmful for children. The chemical 'Tairimin' is the cause of headeche. The colours made from coch are also present in which causes cancer. The quantity of Nickle is also much in these toffees which are harmful for children. These toffees causes blindness, liver, mouth and teeth problems, There are also some non-veg toffees in market. Have you ever read the ingredients of Mentos, Fruillell and Chewup? When you will read it, it is written in small letters "contains beef, bone gelatine" which means meat of cow, bones and bones powder. So from today we should be aware & make others aware about the reality of toffees.

- Nitin Richhariya
(Class-8)

Do you know

- The Girrafe can make any type of voice.
- The Lizard can't drink water in the life.
- The Cat spends her half life in sleeping.
- The Butterfly has more than 1000 eyes.
- The Cockroaches can live 45 days without food.
- The Cricket sleeps for 3 or 4 years.
- The Earth's speed is 18000 km./hour for it's revolution.
- We can see stars in space during day.
- Norway is a country where the days are of 6 months and the nights are of 6 months.
- Vetican City is the biggest palace in world which is situated in Itly.

- Ku. Chitranshi Shrivastava
(Class-5 Dolphin)

National flower of the countries

Lotus	-	India and Egypt
Rose	-	England and Iran
Narcissus	-	China
Cornflower	-	Germany
Thistle	-	Scotland
Lawrel	-	Greece
Po mercnate	-	Spain
Tulip	-	Holland

- Dhruv Rai
(Class-4)

Work is worship

Leave this chanting and
Singing and telling of leads!
Whom dost thou worship in this,
Lonely dark corner of a temple
With doors all shut? open thine
eyes and see thy God is not before there.

He is there, where the tiller is
tilling the hard groun and where
the pathmarker is breaking stones.
He is with them in sun and in
shower, and his garment is covered
with dust, Put off thy holy mantle
and even like him, come
down on the dusty soil !

Come out of thy meditations and
leave aside thy flowers and incense !
what harm is there if thy clothes
become tatter and stained ? Meet
him and stand by him in toil and in
sweat of thy brow.

- Megha Jain
(Class-8)

आदत

राह चलते पथिक ने गुलाब को देखकर कहा,
अरे, गुलाब तुम कितने सुन्दर हो।
काश तुम में काँटे न होते,
तो कितना अच्छा होता
राह चलते पथिक ने
कोयल को देखकर कहा,
अरे-कोयल तुम कितना सुन्दर गाती हो !
काश ! तुम काली न होतीं,
तो कितना अच्छा होता।
राह चलते पथिक ने
समुन्दर को देखकर कहा -
अरे, समुन्दर तुम कितने विशाल हो ।
काश ! तुम खारे न होते,
तो कितना अच्छा होता ।
इस पर प्रकृति की तीनों देनों ने मौन संकेत किया-
हे मनुष्य ! अगर तुम में दूसरों
के दोष देखने की आदत न होती,
तो कितना अच्छा होता ।

संकलन - **अन्चित जैन**
(कक्षा-4)

समय

रोना महज समय का खोना
रोना महज समय को खोना,
टूट गई माला तो क्या गम,
चुन-चुन मोती माला पिरोना ।
रोना महज समय को खोना ।

छः अंगुल की छोटी चिड़िया,
लाख रुपये की सीख सिखाती,
करती तृण दिन-रात इकट्ठे
वन-वन से चुन-चुनकर लाती ।

नये-वृक्ष की नयी शाख पर,
नया घोंसला नया बिछौना,
रोना महज समय को खोना ।

चिड़िया में पंखों की ताकत,
तो चींटी से कर लो बात,
नीड़ नष्टती निर्मम वर्षा,
चलती चींटी दिन और रात ।

अन्धी, बहरी मगर साहसी,
ढूँढे नया बसेरा क्यों ना,
रोना महज समय को खोना ।

संकलन - आकृति शर्मा
(कक्षा-3)

मुझको ऊँची मिले हवेली,
या मिल जाये राजमहल ।
छप्पर की कुटिया हो चाहे,
पेड़ों की छाया शीतल ।
मेरे घर ये नहीं बनेंगे,
चाहे हो कितने सुन्दर ।
मेरी माँ जिस जगह रहेगी,
वही बनेगा मेरा घर ।

- कु. सेजल जैन
(कक्षा-4)

कुल्फी वाला

कुल्फी वाला भैया आया,
ठण्डी मीठी कुल्फी लाया ।
टन-टन-टन-टन घण्टी सुनकर,
झटपट पहुँचे पैसे लेकर ।
धकम-धक्का भीड़म-भाड़,
खाकर ठण्डी हो गई दाढ़ ।
रानी कुल्फी राजा आम,
खाते सुबह-दोपहर-शाम ।

- कु. टीसा तिवारी
(कक्षा-4)

अनुचित मार्ग से धन कमाने में सफल व्यक्ति संकट आने पर उस धन से स्वयं को बचा नहीं पाता है।

अपना ज्ञान बढ़ायें

क्या आप जानते हैं ?

1. रक्तदान से शरीर में शक्ति कम नहीं होती ।
2. एक घण्टा जॉगिंग करने से 500 कैलोरी खर्च होती हैं।
3. इंसान ऐसा प्राणी है, जिसकी आँखों में संवेदना-भरे आँसू आते हैं।
4. 15 से 30 वर्ष की आयु के बीच ही मानव-शरीर का ढाँचा पूरी तरह से आकार ले लेता है।
5. एक अनुमान के अनुसार, चूहे प्रतिवर्ष दुनिया की खाद्य आपूर्ति का एक-तिहाई भाग नष्ट कर देते हैं।
6. हमारे शरीर में लिवर 500 से अधिक कार्य करता है।
7. हाथों के नाखून पैरों के नाखूनों से चार गुना तेजी से बढ़ते हैं।
8. कोई कागज का टुकड़ा 7 बार से अधिक मोड़ा नहीं जा सकता।
9. भालू के 42 दाँत होते हैं।
10. यदि शरीर का तापमान 107.6 डिग्री ऊपर पहुँचता है, तो दिमाग का क्षय होना शुरु हो जाता है।
11. मच्छर के 47 दाँत होते हैं।
12. हमारे शरीर में पानी की मात्रा 53 प्रतिशत पायी जाती है।

- कु. दिव्या पटैल (कक्षा 10)

माचिस की डिबिया पर क्या लगाया जाता है - रेड फॉस्फोरस,
पीने के पानी में कौन-सी गैस मिलायी जाती है - क्लोरीन गैस,
बिजली के बल्ब में कौन-सी गैस भरी होती है - नाइट्रोजन गैस,
गोताखोर अपने पास कौन-सी गैस लिये रहते हैं - ऑक्सीजन गैस,
हँसाने वाली कौन-सी होती है - नाइट्रस ऑक्साइड,
मनुष्य के आँसू में पाया जाता है - सोडियम क्लोराइड,
नकली सोना किसे कहते हैं - आयरन ऑक्साइड को,
घड़ी के अन्दर अन्धेरे में चमकने वाला पदार्थ होता है - रेडियम,
थर्मामीटर में चमकने वाला पदार्थ क्या है - पारा,
चुम्बक किन वस्तुओं को आकर्षित करता है - लोहे की वस्तुओं को,
बिजली के हीटर में किस धातु का तार होता है - नाइक्रोम का तार,
बल्ब का फिलामेण्ट किस धातु का बना होता है - टंगस्टन का,
पानी किन गैसों से मिलकर बनता है - हाईड्रोजन और ऑक्सीजन।

- कु. कल्पना दाँगी
(कक्षा-12 वाणिज्य)

1. राज्य की स्थापना - 1 नवम्बर, 1956,
2. राज्य का पुनर्गठन - 1 नवम्बर, 2000,
3. प्रदेश की राजभाषा - हिन्दी,
4. प्रदेश की राजधानी - भोपाल,
5. प्रदेश का राजकीय पक्षी - दूधराज,
6. प्रदेश का राजकीय पशु - बारहसिंगा,
7. प्रदेश का राजकीय पुष्प - लिली,
8. प्रदेश का राजकीय वृक्ष - बरगद,
9. राज्य की सबसे ऊँची चोटी - धूपगढ़ (1350 मीटर),
10. मध्यप्रदेश का उच्च न्यायालय - जबलपुर।

- हेमन्त लोधी
(कक्षा 5)

मिर्ची इतनी तीखी क्यों ?

क्या आपने कभी सोचा है कि मिर्च इतनी तीखी क्यों होती है या इसमें तीखापन कहाँ से आता है ? वैज्ञानिकों का दावाहै कि उन्होंने इस पहेली का हल ढूँढ लिया है। बॉयोलॉजिकल साइंसेज नाम की पत्रिका के अनुसार इसका मुख्य कारण मिर्च के पौधे का जल के सम्पर्क में आने से है। इसके तीखेपन के पीछे कैपसाईपिनाइड पदार्थ है, जो इसे फफूँद से बचाता है। यह तीखा पदार्थ उत्तरी क्षेत्र में 20 से 30 प्रतिशत मिर्चों में ही मौजूद था, जबकि दक्षिणी क्षेत्रों में करीब 100 प्रतिशत मिर्च के पौधों में इस तीखे पदार्थ के होने से मिर्च बहुत अधिक तीखी थी।

निष्कर्ष निकाला गया कि मिर्च का तीखापन फफूँद से बचाने के लिए इस तत्त्व के विकास से पनपता है।

- कु. झलक जैन
(11 बॉयो)

भारत में प्रथम

प्रथम राष्ट्रपति – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद,
प्रथम उपराष्ट्रपति – सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन,
प्रथम प्रधानमन्त्री – पं. जवाहरलाल नेहरू,
प्रथम उप-प्रधानमन्त्री – सरदार वल्लभ भाई पटेल,
प्रथम कार्यकारी प्रधानमन्त्री – गुलजारीलाल नन्दा,
प्रथम भारतीय गवर्नर – राजगोपालाचारी,
प्रथम मुख्य न्यायाधीश – हीरालाल जे. कालिया,
प्रथम सेनाध्यक्ष – जनरल करियप्पा,
प्रथम चीनी यात्री – फाह्यान (400 ईसवी),
प्रथम यूरोपी आक्रमणकारी – सिकन्दर (326 ईसा पूर्व),
प्रथम मुस्लिम आक्रमणकारी – मुहम्मद बिन कासिम (712 ईसवी),
प्रथम मुगल बादशाह – बाबर (1326 ईसवी),
प्रथम नोबल पुरस्कार-विजेता – रवीन्द्रनाथ टैगोर,
प्रथम एवरेस्ट विजेता भारतीय – तेनसिंह (तेंजिंग) नोर्के (1953),
प्रथम भारतीय अन्तरिक्ष-यात्री – राकेश शर्मा (1984),
प्रथम परमाणु-विस्फोट – पोकरण (1974),
प्रथम स्थापित विश्वविद्यालय – कलकत्ता विश्वविद्यालय,
प्रथम रेल-सेवा-प्रारम्भ – मुम्बई से थाना 35 किमी.,
प्रथम हवाई-डाक-सेवा – इलाहाबाद में (1929) से प्रारम्भ,
प्रथम एशियाई खेल – दिल्ली से प्रारम्भ,
प्रथम आम चुनाव – 1952 में,
प्रथम फिल्म कौन-सी कब बनी – राजा हरिश्चन्द्र (1913 में)।

संकलनकर्त्ता – **प्राणेश श्रीवास्तव**
(कक्षा-9)

आविष्कार और आविष्कारक

मोटरकार – ऑस्टिन,
डीजल-इंजन – रूडोल्फ डीजल,
सिलाई-मशीन – एलियन होवे,
विद्युत-बल्ब – एडीसन,
टेलीफोन – ग्राहम बैल,
हेलीकॉप्टर – ब्रेकेट,
थर्मामीटर – फॉरेनहाईट,
फोटोग्राफी – एल.डेग्यूरे,
लिफ्ट – एफ.जी.ऑटिस,
रबर टायर – डनलप,
टाइपराईटर – सी.सोल्स,
एक्स-रे – डब्लू.के.रोण्टेजन,
परमाणु बम – ऑटोहॉन,
बाईसिकल – मैकमिलन,
टेलीविजन – जे. एल. बेयर्ड।

– **आशीष अहिरवार**
(कक्षा-6)

विश्व में भारत की शक्ति

1. भारत विश्व में नाभिकीय क्षेत्र में सातवाँ शक्तिशाली देश है।
2. भारत आर्थिक रूप से विश्व में पाँचवा सक्षम बड़ा देश है।
3. भारत विश्व में दूसरा बड़ा जनशक्ति (संख्या) प्रधान देश है।
4. भारत विश्व में वह सबसे बड़ा प्रजातान्त्रिक देश है, जिसमें प्रथम महिला प्रधानमन्त्री चुनी गयी।
5. भारत विश्व में अरबों डॉलर का व्यापार-व्यवसाय करने वाला पाँचवा देश है।
6. भारत विश्व में थल-सेना व नौसेना में क्रूज मिसाइल का उपयोग करने में पूर्ण रूप से विकसित व सक्षम तीसरा देश है।

– **निखिल रघुवंशी**
(कक्षा 8)

नन्हीं कूची

– **शुभम जाटव** (कक्षा 8)

– **कु. रोशनी वैष्णव** (कक्षा 5)

– **अंकुर सेन** (कक्षा 10)

– **कु. तनु रघुवंशी**

हँसी का धमाका

सन्ता-बन्ता आपस में चर्चा कर रहे थे।
सन्ता - जब मैं कॉफी पी लेता हूँ, तो सो नहीं पाता हूँ।
बन्ता - मेरे साथ इसका उल्टा होता है। जब मैं सो जाता हूँ, तो कॉफी नहीं पी पाता।

।

डॉक्टर (चिंकी से) - तबियत कैसी है अब?
चिंकी - पहले से ज्यादा खराब।
डॉक्टर - दवाई खा ली थी क्या?
चिंकी - नहीं, दवाई की शीशी तो भरी हुई थी।
डॉक्टर - मेरा मतलब दवाई ले ली थी।
चिंकी - जी! आपने दी थी, तो मैंने ले ली थी।
डॉक्टर - बेवकूफ, दवाई पी ली थी ?
चिंकी - नहीं जी, दवाई तो लाल थी ।
डॉक्टर - अरे बहिन जी, दवाई को पी लिया था?
चिंकी - नहीं सर, पीलिया तो मुझे था।
डॉक्टर - अरे, दवा को मुँह में लगाकर पेट में डाला था ?
चिंकी - नहीं।
डॉक्टर - क्यों ?
चिंकी - आपने ही तो कहा था, शीशी को ढक्कन लगाकर रखना।

।

शिक्षक ने रितिक से पूछा - बताओ, गाय और ग्वाले में क्या अन्तर है?
रितिक - गाय शुद्ध दूध देती है और ग्वाला मिलावटी दूध देता है।

एक पागल दूसरे पागल से कहता है कि मैं ताजमहल खरीदने वाला हूँ।
तो दूसरा पागल कहता है कि मैं बेचूँगा ही नहीं।

मरीज-डॉक्टर साहब, मुझे अजीब-सी बीमारी है, न खाऊँ तो भूख लगती है,
न सोऊँ, तो नींद आती है, ज्यादा काम करूँ तो थक जाता हूँ। मैं क्या करूँ?
डॉक्टर - तुम बस एक आसान सा कठिन काम करो, सारी रात धूप में बैठो,
बीमारी तुरन्त ठीक हो जायेगी।

- अंकित शर्मा (कक्षा 6)

शिक्षक - बेटा आकाश, तुम्हें विद्यालय कब अच्छा लगता है?
आकाश - जब विद्यालय बन्द होता है।

।

लक्की (अमन से) - तुम्हें पता है, तुम्हारे पिताजी मुझे भगवान् समझते हैं।
अमन - तुम्हें कैसे पता चला?
लक्की - सुबह जब मैं तुम्हारे घर गया, तो बोले - हे भगवान्! तू फिर आ गया।

।

विदेशी क्रिकेट टीम का कप्तान - तुम्हारे देश के मैदान पर घास नहीं है।
भारतीय कप्तान - तुम यहाँ खेलने आते हो या चरने।

- निखिल रघुवंशी (कक्षा 8)

पहेलियाँ

बीमार नहीं रहती, फिर भी खाती गोली ।
बच्चे-बूढ़े डर जाते, सुनकर मेरी बोली ।

खरीदने पर काला, जलाने पर लाल ।
फेंकने पर सफेद, कैसा है कमाल ।

लाल-लाल डिब्बा, डिब्बे में छेद ।
बन्द किया ताला, क्या है इसका भेद ?

पढ़ने में, लिखने में, दोनों में ही मैं आता हूँ काम।
पेन नहीं हूँ, कागज नहीं हूँ, सोचो फिर क्या है मेरा नाम ?

पेट में अँगुली, सिर पर पत्थर, जल्दी से बताओ उसका उत्तर ।

मैं हूँ एक अनोखी रानी, पैरों से पीती हूँ पानी।

- रश्मि रघुवंशी (कक्षा-8)

बन्दूक, कोयला, लैटर-बॉक्स, चश्मा, अँगूठी, लालटेन।

सामान्य ज्ञान की पहेलियाँ

1. विश्व में कौन-सा पक्षी था, जो हाथी जैसे विशाल जानवर को पंजे में दबाकर उड़ जाता था ?
2. बादशाह अकबर की मृत्यु कब हुई थी ?
3. ऐसी कौन-सी गैस है, जिसके सूँघने पर मनुष्य केवल हँसता ही रहता है?
4. सबसे अधिक दिनों तक जीने वाला प्राणी ?
5. टार्च जैसी रोशनी लेकर चलने वाली मछली ?
6. अमेरिका कब आजाद हुआ था ?
7. लीग ऑफ नेशन की स्थापना कब हुई थी ?
8. भारत के पहले आई.सी.एस. अफसर का क्या नाम था ?
9. ऐसा कौन-सा जानवर है दु:ख में आदमियों की भाँति रोता है ?
10. पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी कितनी है ?
11. मनुष्य का हृदय 24 घण्टे में कितनी बार धड़कता है ?

- विकास दुबे (कक्षा 7)

उत्तर - (1) उकाब पक्षी, (2) 25-26 अक्टूबर, 1605, आधी रात में, (3) नाइट्रस ऑक्साइट, (4) कछुआ (300 वर्ष तक), (5) जॉईजेण्टेटिक्स, (6) 4 जुलाई, 1776 को, (7) सन् 1920 में, (8) सुरेन्द्र बनर्जी, (9) भालू, (10) 22,23,885 मील, (11) 106560 बार।

सफलता का रहस्य

सफलता प्राप्त करने के लिए अटल धैर्य और दृढ़ इच्छा चाहिए। धीर व्यक्ति कहता है, "मैं समुद्र पी जाऊँगा, मेरी इच्छा से पर्वत टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे।" इस प्रकार का साहस और इच्छा रखो, कड़ा परिश्रम करो, तुम अपने उद्देश्य में निश्चित सफल हो जाओगे।

एक विचार लो; उसी विचार को अपना जीवन बनाओ - उसी का चिन्तन करो, उसी का स्वप्न देखो और उसी में जीवन बिताओ। तुम्हारा मस्तिष्क, स्नायु, शरीर के सर्वांग उसी विचार से पूर्ण रहें। दूसरे समस्त विचारों को त्याग दो। यही सिद्ध होने का उपाय है; और इसी प्रकार महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व उत्पन्न हुए हैं।

हमें अनन्त शक्ति, अनन्त उत्साह, अनन्त साहस तथा अनन्त धैर्य चाहिये। केवल तभी महान कार्य सम्पन्न होंगे ।

हम जितने शान्तचित्त होंगे और हमारे स्नायु जितने संतुलित रहेंगे, हम जितने ही अधिक प्रेम-सम्पन्न होंगे - हमारा कार्य भी उतना ही अधिक उत्तम होगा।

जिनमें सत्य, पवित्रता और निःस्वार्थता विद्यमान है, उन्हें स्वर्ग, मर्त्य एवं पाताल की कोई भी शक्ति कुछ क्षति नहीं पहुँचा सकती। इन गुणों के रहने पर, चाहे समस्त विश्व ही किसी व्यक्ति के विरूद्ध क्यों न हो जाये, वह अकेला ही उसका सामना कर सकता है।

- स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानंद 150 वाँ जयन्ती वर्ष
सन् 1863 से 2013